गुरु ग्रंथ साहिब

जीवन युक्ति



धर्म प्रचार कमेटी

दिल्ली सिक्ख गुरद्वारा प्रबंधक कमेटी

~ जागत ज्योति ~

सिक्ख धर्म का मूल 1469 ई. में ही बंध गया था। जब अकाल पुरख ने अपने गुण आकार में प्रक्ट किये, तो उस आकार का नाम गुरू नानक हुआ:

जोति रूप हरि आपि गुरू नानकु कहायउ ॥

(गु.ग्रं.सा. अंग 1408)

गुरू नानक पातशाह ने परम्परागत धर्मों के सिद्धांतों को मानने से इन्कार करते हुए ऐसे सिद्धांतों की नींव रखी जिस के द्वारा आम लोकाई को वहम-भ्रम तथा व्यर्थ कर्म-काण्डों में से निकाल कर एक अकाल पुरख की अराधना के लिए प्रेरित किया। दूसरी ओर समाज में से धर्म का मूल पंख लगा कर उड़ चुका था तथा काज़ी व पंडित रिश्वतखोर हो चुके थे। गुरू साहिब ने जाति-पाति में बंट चुकी सामाजिक व्यवस्था को 'ऐकस के हम बारिक' का सिद्धांत दिया।



गुरू नानक साहिब ने भाई लहिणा जी को गुरूगद्दी सौंप कर, उन्हें 'गुरू अंगद' जान कर माथा टेका।

जोति ओहा जुगति साइि सहि काइिआ फेरि पलटीऐ ॥

(गु.ग्रं.सा. अंग 966)

गुरू अंगद पातशाह ने इस बाणी की सम्भाल व विस्तार अपने गुरू काल में किया तथा गुरमुखी लिपि का श्रृंगार व प्रचार किया। साथ ही आप जी ने पाठशालाएं एवं मल अखाड़े कायम किये।

तीसरे गुरू नानक के रूप में गुरू अमर दास जी 'निमाणियों के मान', 'निताणियों के ताण', 'निओटिओ की ओट' करके जाने गये। आप जी ने कच्ची बाणी को रोकने के लिए बाणी में ही इसका निर्णय दे दिया :

सतिगुरू बिना होर कची है बाणी ॥

बाणी त कची सतिगुरू बाझहु होर कची बाणी ॥

कहदे कचे सुणदे कचे कचीं आखि वखाणी ॥

(गु.ग्रं.सा. अंग 920)

साथ ही आप जी ने अमीर व ग़रीब को एक ही स्थान पर बैठ कर लंगर छकने की प्रेरणा दी और गुरमति के प्रचार के लिए 22 मंजियों की स्थापना की।

गुरू राम दास जी ने संगीत व राग के पक्ष से बाणी की कलात्मकता को शिखर तक पहुंचाया। साथ ही आप जी ने बाणी व गुरू में अभेदता को स्पष्टता के साथ ब्यान किया :

बाणी गुरू गुरू है बाणी विचि बाणी अंमृतु सारे ॥
गुरुबाणी कहै सेवकु जनु मानै परतखि गुरू निसतारे ॥

(गु.ग्रं.सा. अंग ९८२)

गुरू अर्जन देव जी ने सब से ज़्यादा बाणी रचना तथा सम्पूर्ण बाणी का संकलन व सम्पादन किया। 'आदि ग्रंथ' दुनिया का प्रथम ऐसा धार्मिक ग्रंथ हुआ जिसका सम्पादन धर्म के प्रवर्तक ने स्वयं किया। 'आदि ग्रंथ' के प्रथम प्रकाश के पश्चात गुरू साहिब ने अपना सिंहासन नीचा कर लिया और संगत को बाणी के सत्कार व प्यार का ढंग सिखाया।



गुरू अर्जन देव जी की शहीदी के पश्चात गुरू हरिगोबिन्द साहिब ने 'मीरी-पीरी' की दो तलवारें धारण की तथा भक्ति व शक्ति का सुमेल करते हुए श्री अकाल तख्त की स्थापना की। साथ ही आप जी ने बाणी के प्रचार व प्रसार के लिए 'आदि ग्रंथ' के बहुत से स्वरूप तैयार करवाए तथा सब से ज़्यादा उतारे गुरू हरि राय साहिब के समय हुए मिलते हैं। जहां गुरू हरि राय साहिब ने लोगों के इलाज के लिए केन्द्र खोले, वहीं बाणी के अदब-सत्कार को कायम रखने के लिए पुत्र का त्याग भी करना पड़ा तो आप ने राम राय को मुंह न लगाया और योग्यता को प्रमुख रखते हुए गुरू हरिकिशन साहिब को गुरगद्दी सौंप दी।

गुरू हरिकिशन साहिब ने संगत को 'बाबा बकाले' का संकेत कर गुरू तेग़ बहादर साहिब को गुरगद्दी सौंप दी। आप ने इस बाणी के प्रचार-प्रसार के लिए बहुत प्रचारक दौरे किए, स्वयं बाणी का उच्चारण किया तथा एक नया राग 'जैजावंती' का प्रयोग भी किया।

गुरू तेग़ बहादर जी की शहीदी के पश्चात गुरू गोबिन्द सिंह जी ने ख़ालसा की सृजना की। साथ ही आप जी ने पाउंटा व अनंदपुर साहिब में बाणी की सम्भाल, लिखाई व व्याख्या का विशाल स्तर पर प्रबंध किया तथा तलवंडी साबो में आज की मौजूदा 'गुरू ग्रंथ साहिब' की बीड़ का स्वरूप तैयार करवाया, जिसे नांदेड़ में गुरगद्दी

सौंप कर, स्वयं माथा टेक कर, गुरू ज्योति उसमें टिका कर, सिक्खों को उसके अधीन कर दिया। इस प्रकार आप ने 'गुरू पंथ' को 'गुरू ग्रंथ' के अधीन कर दिया।

गुरू ग्रंथ साहिब का सम्पादन

गुरू ग्रंथ साहिब के सम्पादन का कार्य पांचवे पातशाह गुरू अर्जन देव जी द्वारा सम्पूर्ण हुआ। 1599 ई. में इस ग्रंथ का सम्पादन का कार्य आरम्भ हुआ। सम्पादन के कार्य के लिए अमृतसर के बिलकुल समीप रामसर के रमणीक स्थल का चुनाव किया गया। इस पवित्र 'आदि ग्रंथ' को लिखने का मान भाई गुरदास जी को प्राप्त हुआ और 1604 ई. में यह पवित्र 'आदि ग्रंथ' समपन्न हुआ।

'आदि ग्रंथ' का प्रथम प्रकाश 1 सितम्बर 1604 ई. को श्री हरिमन्दिर साहिब में किया गया तथा बाबा बुढ्ढा जी को इसका प्रथम ग्रंथी नियुक्त किया गया। इस प्रथम प्रकाश के समय जो हुक्मनामा आया, वह यह है :

सूही महला ५ ॥
संता के कारजि आपि खलोइिआ हरि कंमु करावणि आइिआ राम ॥
धरति सुहावी तालु सुहावा विचि अंमृत जलु छाइिआ राम ॥
अंमृत जलु छाइिआ पूरन साजु कराइिआ सगल मनोरथ पूरे ॥
जै जै कारु भइिआ जग अंतरि लाथे सगल विसूरे ॥
पूरन पुरख अचुत अबिनासी जसु वेद पुराणी गाइिआ ॥
अपना बिरदु रखिआ परमेसरि नानक नामु धिआइिआ ॥१॥

(गु.ग्रं.सा. अंग 783)



~ गुरू मानयो ग्रंथ ~

दसम पातशाह गुरू गोबिन्द सिंह जी ने अनंदपुर साहिब छोड़ने के पश्चात तलवंडी साबो में रैन-बसेरा बनाया तथा वहां 'आदि ग्रंथ' की सम्पूर्ण बाणी को लिखित रूप प्रदान किया। इस लिखित रूप की सेवा का कार्य भाई मनी सिंह जी के हिस्से आया। इस ग्रंथ में गुरू तेग़ बहादर साहिब जी की बाणी दर्ज़ की व जैजावंती राग शामिल कर रागों की संख्या 31 कर दी। इसी पवित्र धर्म ग्रंथ को 1708 ई. में गुरू गोबिन्द सिंह जी ने ज्योति-जोति समाने के समय गुरगद्दी दे कर सिक्खों को 'गुरू ग्रंथ साहिब' के अधीन किया और 'शब्द गुरू' का नया सिद्धांत स्थापित कर दिया।

आज्ञा भई अकाल की, तबै चलायो पंथ।
सब सिक्खन को हुक्म है गुरू मानयो ग्रंथ।
गुरू ग्रंथ जी मानिआहु, प्रगट गुरां की देह।
ज़ो प्रभु को मिलबो चहै, खोज शब्द मै लेह।



~ बाणी सम्पादन ~

गुरू अर्जन देव जी द्वारा सम्पादित किए गुरू ग्रंथ साहिब के पवित्र स्वरूप को सरल तरीके से समझने के लिए इसे तीन भागों में बांट कर देखा जा सकता है:

1. अंग संख्या 1 से 13 तक - नितनेम की बाणियां दर्ज की गई हैं जिनमें 'जपु' राग रहित बाणी है तथा 'सो दरु' व 'सोहिला' के शब्द संग्रह रागों में भी हैं।
2. अंग संख्या 14 से 1353 तक-यह सम्पूर्ण राग बद्ध बाणी है और गुरू ग्रंथ

साहिब का बड़ा हिस्सा है। गुरू अर्जन देव जी ने इस हिस्से को 30 रागों में बांटा तथा बाद में गुरू गोबिन्द सिंह जी ने गुरू तेग़ बहादर साहिब की पवित्र रचना एवं जैजावंती राग दर्ज करके रागों की संख्या 31 कर दी।

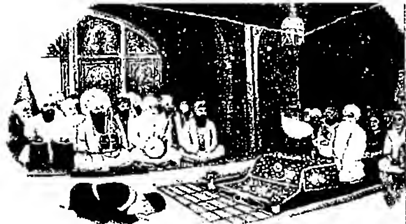
3. अंग संख्या 1353 से 1430 तक – इस भाग में सलोक सहसकृिती महला पहिला, सलोक सहसकृिती महला पंजवा, गाथा महला ५, फुनहे महला ५, चउबोले महला ५, सलोक भगत कबीर जीउ के, सलोक शेख फरीद के, सवैये स्री मुखबाक महला ५, सवैये भट्टों के, सलोक वारां ते वधीक, सलोक महला ९, मुंदावणी महला ५ तथा राग माला दर्ज है।



रागों की तरतीब

राग संगीत की बुनियाद हैं और संगीत के महत्त्व को गुरू साहिबान भली – भांति जानते थे। गुरू ग्रंथ साहिब में रागों को बहुत महत्त्वता दी गई है। गुरू ग्रंथ साहिब में दर्ज़ राग तरतीब इस प्रकार है:

1. राग सिरी रागु	2. राग माझ
3. राग गउड़ी	4. राग आसा
5. राग गूजरी	6. राग देवगंधारी
7. राग बिहागड़ा	8. राग वडहंसु
9. राग सोरठि	10. राग धनासरी
11. राग जैतसरी	12. राग टोडी
13. राग बैराड़ी	14. राग तिलंग
15. राग सूही	16. राग बिलावल
17. राग गोंड	18. राग रामकली
19. राग नट नाराइिन	20. राग माली गउड़ा
21. राग मारू	22. राग तुखारी
23. राग केदारा	24. राग भैरउ
25. राग बसंत	26. राग सारंग



23. राग मलार
28. राग कानड़ा
29. राग कलिआण
30. राग प्रभाती
31. राग जैजावंती

~ गुरू ग्रंथ साहिब में विशेष शीर्षक बाणियां ~

गुरू ग्रंथ साहिब में दर्ज बाणी की तरतीब कुछ इस प्रकार है :

1 जपु – गुरू ग्रंथ साहिब का आरम्भ 'जपु' बाणी से होता है तथा यह नितनेम की बाणी है। यह बाणी गुरू नानक पातशाह द्वारा रचित है। इस बाणी की 38 पउड़ियां व 2 सलोक हैं।

2. सो दरु –'सो दरु' का शब्द गुरू ग्रंथ साहिब में तीन बार अंकित किया गया है। इस बाणी का मूल भाव प्रभु के घर की महिमा का वर्णन है।

3. सो पुरखु – यह पांच पदों की रचना है तथा इसमें परमात्मा के गुणों का सम्पूर्ण तौर पर वर्णन किया है।

4. सोहिला – गुरू ग्रंथ साहिब में यह बाणी अंग 12 पर अंकित है तथा यह सिक्ख के नितनेम की बाणी है। इस बाणी में महला १, महला ४ व महला ५ की बाणी दर्ज़ है।

5. वणजारा – गुरू राम दास जी द्वारा रचित बाणी 'वणजारा' गुरू ग्रंथ साहिब के सिरी रागु में अंग 80 पर अंकित है।

6. करहले – यह रचना गुरू राम दास जी की है जो कि गुरू ग्रंथ साहिब के अंग 234 पर दर्ज़ है।

7. सुखमनी – यह गुरू अर्जन पातशाह की एक बड़े आकार की बाणी है। इसकी 24 पउड़िया व 24 असटपदियां है। यह गुरू ग्रंथ साहिब के अंग 262 पर गउड़ी राग में दर्ज़ है।

8. बिरहड़े – गुरू अर्जन देव जी द्वारा रचित यह बाणी आसा राग में गुरू ग्रंथ साहिब के अंग 431 पर सुशोभित है।

9. अलाहणीआ – इस शीर्षक के अधीन गुरू नानक पातशाह व गुरू अमरदास जी की बाणी गुरू ग्रंथ साहिब में दर्ज़ है।

10. आरती – यह गुरू नानक साहिब की रचना राग धनासरी में है।

11. कुचजी - इस शीर्षक के नीचे गुरू नानक पातशाह द्वारा रचित केवल 16 पंक्तियां हैं। यह रचना गुरू ग्रंथ साहिब में सूही राग में अंग 762 पर अंकित है।

12. सुचजी - गुरू ग्रंथ साहिब के सूही राग में सुशोभित यह रचना गुरू नानक साहिब की है।

13. गुणवंती - गुरू अर्जन साहिब द्वारा रचित गुरू ग्रंथ साहिब के सूही राग में यह बाणी दर्ज़ है।

14. घोड़ीआ - गुरू ग्रंथ साहिब के अंग 575 पर वडहंस राग में गुरू राम दास जी की यह रचना 'घोड़ीआ' दर्ज़ है।

15. पहरे - इस शीर्षक से गुरू नानक देव जी, गुरू राम दास जी व गुरू अर्जन देव जी द्वारा रचित बाणी गुरू ग्रंथ साहिब में दर्ज़ है।

16 अनंदु - 'अनंदु' गुरू अमरदास जी की प्रमुख बाणी है जो 'रामकली महला ३ अनंदु' शीर्षक से गुरू ग्रंथ साहिब के अंग 917 पर दर्ज़ है। इस बाणी की 40 पउड़ियां हैं। सिक्ख धर्म परम्परा में इस बाणी की 6 पउड़ियां–पहली पांच व अंतिम का गायन नियम से प्रत्येक कार्य में किया जाता है।

17. ओअंकार - यह गुरू नानक पातशाह की बाणी राग रामकली में गुरू ग्रंथ साहिब के अंग 929 पर सुशोभित है।

18. सिध गोसटि - गुरू नानक पातशाह ने इस बाणी द्वारा अंतर–धर्म संवाद की बुनियाद रखी है। यह बाणी गुरू ग्रंथ साहिब के अंग 938 पर अंकित है।

19. अंजुलीआ - इस शीर्षक से गुरू अर्जन पातशाह ने बाणी रचना की है। यह बाणी गुरू ग्रंथ साहिब के अंग 1019 पर सुशोभित है।

20. मुदावणी - पंचम पातशाह का यह शब्द 'मुंदावणी' शीर्षक के तहत गुरू ग्रंथ साहिब के अंग 1429 पर दर्ज़ है। गुरू ग्रंथ साहिब के इस अंतिम शब्द में गुरू साहिब ने बताया है कि यह गुरू ग्रंथ साहिब रूपी थाल सत्य, संतोष व विचार से परोस दिया है और इसे तैयार करते समय अमृत नाम का प्रयोग किया गया है। कोई भी जिज्ञासु इस अमृत रूपी थाल को बिना किसी भय के भुंच सकता है, भाव सहज रूप से इसका मंथन करके प्रभु एवं मनुष्य के बीच की दूरियां हमेशा के लिए समाप्त हो सकती हैं।

21. राग माला - गुरू ग्रंथ साहिब के अन्त में अंग 1429 व 1430 पर रागमाला दर्ज़ है।



गुरू ग्रंथ साहिब में आए बाणीकारों की तरतीब

गुरू अर्जन देव जी एक ऐसे धर्म ग्रंथ की सम्पादना करना चाहते थे जो राष्ट्रीय व अंर्तराष्ट्रीय सरहदों को तोड़ता हुआ संसारिक स्तर पर स्थापित हो। इसीलिए जहां इसमें गुरू साहिबान की बाणी अंकित की गई, वहां साथ ही हिन्दू भगतों व मुस्लमान पीर – फकीरों की बाणी को भी योग्य स्थान देकर सम्मान दिया गया।

गुरू ग्रंथ साहिब में 6 गुरू साहिबान, 15 भगत साहिबान, 11 भट व 4 गुरसिक्ख – कुल 36 बाणीकारों की बाणी शामिल है।

इस तरह यह संसार का प्रथम ऐसा धर्म ग्रंथ है जिसमें न केवल भिन्न – भिन्न धर्मों बल्कि भिन्न – भिन्न सभ्याचारों, बोलियों व जातियों के मनुष्यों को स्थान देकर मानव सम्मान को शिखर पर पहुंचाया गया है। गुरू ग्रंथ साहिब में बाणी अंकित करने की केवल एक कसौटी, गुरू नानक पातशाह के सिद्धांत हैं, ना कि जाति की उत्तमता। इसीलिए जहां भगत रविदास जी चमार जाति से सम्बन्धित हैं, वहीं भगत रामानन्द जी ब्राहमण हैं।

गुरू ग्रंथ साहिब में बाणीकारों को प्रत्येक राग आरम्भ होने पर एक क्रम में रखा गया है :

1. पहले गुरू साहिबान की बाणी क्रम अनुसार
2. फिर भगतों की बाणी
3. भट्टों की बाणी
4. गुरसिक्ख बाणीकारों की रचना



गुरू साहिबान

गुरू साहिबान की सारी बाणी 'नानक' छाप से दर्ज़ है। लेकिन यह बताने के लिए कि यह बाणी किस गुरू साहिबान की है, 'महला' शब्द का प्रयोग किया गया है।

'महला' अरबी भाषा के शब्द हलूल से लिया माना जाता है। हलूल का अर्थ है उतरने का स्थान। दूसरा 'महला' के अर्थ शरीर के लिए भी किए जाते हैं।

गुरू ग्रंथ साहिब में पहले पांच गुरू साहिबान व नौवें गुरू साहिब की बाणी दर्ज़ है।

❋ गुरू नानक देव जी ❋

सिक्ख धर्म के संस्थापक गुरू नानक देव जी का प्रकाश 1469 ई. में राए भोइे की तलवंडी (ननकाणा साहिब पकिस्तान) में महता कालू व माता तृप्ता जी के घर हुआ। पिता का सम्बन्ध अमीर परिवार से था व पेशा पटवारी का था। आप की, आप से बड़ी एक बहन बेबे नानकी थी।

आप जी ने नौ वर्ष की उम्र में जनेऊ की रस्म से इन्कार कर कर्म – काण्डों का निषेधा किया एवं 'सच्चे सौदे' का व्यापार करके 'सच्ची किरत' की शुरूआत की। अठारह वर्ष की उम्र मे आप का विवाह माता सुलखणीस से हुआ। आप के गृह में दो साहिबज़ादे बाबा सिरी चंद व लखमी दास पैदा हुए पर गुरू साहिब न स्वभाव से बदले व न कर्म से। आप ने नाम जपो, किरत करो व वंड छकने का उपदेश ही नहीं दिया बल्कि स्वयं अपने जीवन काल में कर के दिखलाया।

आप जी ने मनुष्य समानता का ऐलान करते हुए 'ना को हिन्दू न मुस्लमान' की आवाज़ बुलंद की। इसके पश्चात आप ने उदासियों का आरम्भ किया जिसमें संसार की चारों दिशाओं की ओर सच, धर्म व प्रभु का संदेश दिया। गुरू नानक साहिब का उपदेश एक जाति, एक वर्ग या एक धर्म के लिए नहीं बल्कि सारी मनुष्य जाति के लिए है। उदासियों के उपरान्त आप ने करतारपुर नगर बसाया, खेती शुरू कर दी और एक प्रभु, एक मानवता और एक समाज का उपदेश दिया। आप ने संगत व लंगर की प्रथा कायम की। आप ने उपदेश दिया कि यह संसार अकाल पुरख की धर्मशाला है, इसीलिए अपने मूल को पहचानो तथा अपने स्रोत के साथ अभेद होने के लिए सच्ची किरत करते हुए सेवा – सिमरन को अपनाओ।

गुरू नानक साहिब ने भाई लहिणा को 'गुरू अंगद' थाप कर यह बता दिया कि विरासत की कसौटी योग्यता है, जन्म नहीं। गुरू नानक देव जी 1539 ई. में करतारपुर में ही ज्योति – जोति समा गए।

बाणी रचना : 974 शब्द, 19 रागों में

प्रमुख बाणियां : जपु, पहरे, वार माझ, पटी, अलाहणीआ, कुचजी, सुचजी, थिती, ओअंकार, सिध गोसटि, बारह माहा, आसा की वार एवं वार मलार।



❋ गुरू अंगद देव जी ❋

1504 ई. को मत्ते की सराय नाम के गांव में पिता फेरूमल व माता दया कौर जी के घर एक बालक का जन्म हुआ जिसका नाम 'लहिणा' रखा गया।

1519 ई. को आप जी का विवाह बीबी खीवी से सम्पन्न हुआ। आप जी के घर दो साहिबज़ादे (बाबा दासू व दातू) तथा दो साहिबज़ादियां (बीबी अमरो व बीबी अनोखी) पैदा हुए।

आप जी धार्मिक विचारों के मालिक थे तथा आप हर वर्ष ज्वाला जी जाते पर मन की बहिबलता घटने की बजाए बढ़ती गई। आपकी आध्यात्मिक भूख की तृप्ति गुरू नानक पातशाह की हज़ूरी में दूर हुई। आप बाणी से ऐसे प्रभावित हुए कि आप गुरू साहिब के सेवक बन गये। फिर गुरू नानक साहिब ने भाई लहिणा की परख करके आप को 'गुरू अंगद' के रूप में गुरगद्दी के सिंघासन पर सुशोभित किय।

गुरू नानक पातशाह ने गुरू अंगद साहिब को खडूर जाने का हुक्म किया और कहा, 'शब्द सिद्धांत से संगत को जोड़ो'। खडूर पहुंच कर गुरू अंगद देव जी सिक्खी के प्रचार-प्रसार के लिए कार्यशील हुए और लंगर मे माता खीवी की नियुक्ति ने औरत के सम्मान को शिखर पर पहुंचा दिया। जन्मसाखी व सिक्ख सिद्धांत को लिखने की परम्परा चला कर आप ने अहम भूमिका निभाई। आप ने बच्चों की पाठशाला, मल अखाड़े व गुरमुखी लिपि की शोध-सुधाई कर प्रमाणिक रूप दे कर यह समझा दिया कि इस नवोदित धर्म की अपनी लिपि होगी जो 'गुरमुखी' के नाम से जानी जाएगी।

इस प्रकार सिक्खी के इस विशिष्ट रूप को और आगे बढ़ाते हुए 48 वर्ष की आयु में 1552 ई. को खडूर साहिब में आप ज्योति-जोति समा गए और गुरू नानक ज्योति गुरू अमरदास जी में स्थापित कर तृतीय गुरू की उपाधि देकर उन्हे गोइंदवाल जाने का हुक्म कर गए।

बाणी रचना : 63 सलोक



❀ गुरू अमर दास जी ❀

1479 ई. को बासरके गांव में पिता तेजभान जी व माता राम कौर जी के घर (तृतीय गुरू) अमरदास जी का जन्म हुआ। आप जी का खानदानी पेशा व्यापार व खेती था।

आप जी के भतीजे के साथ गुरू अंगद पातशाह की साहिबज़ादी बीबी अमरो का विवाह हुआ था। उन्हीं से ही आप ने गुरू पातशाह की बाणी सुनी, तन-मन में ऐसी ठंडक महसूस की कि गुरू अंगद पातशाह के चरणों पर गिर पड़े और फिर उन्हीं के हो कर रह गए। आप ने लगभग 12 वर्ष गुरू साहिब की अपने कर-कमलों द्वारा सेवा करते हुए लोक-लज्जा की परवाह नहीं की। गुरू अंगद पातशाह की पारखी नज़र ने परख लिया कि गुरगद्दी का असली उत्तराधिकारी आ पहुंचा है। पर इसके बावजूद परख हुई जिसमें आप पूर्ण उतरे।



बाबा बुद्ढा जी के हाथों से आप को गुरगद्दी पर बिठाया गया और आप जी को गोइंदवाल जा कर प्रचार करने का हुक्म हुआ।

गुरू अमरदास जी ने सिर झुका कर हुक्म की तामील की और गोइंदवाल जाकर विराजमान हुए। आप ने गुरू नानक पातशाह के सिद्धांत को आगे बढ़ाया। आप जी ने संगत, लंगर व सेवा को परिपक्व किया, प्रचार के लिए मंजियों की स्थापना की और सती प्रथा व पर्दे की मनाही के आदेश दिए। साथ ही आप ने यह हुक्म जारी कर दिया कि लंगर में प्रशादा लिए बिना कोई भी गुरू दरबार में हाज़री नहीं भरेगा। आप ने ऊंच-नीच, अमीर-ग़रीब के भेद भाव को मिटाने के लिए ऐसी मिसाल कायम की बादशाह अकबर को भी 'पंगत' में सांझे रूप में लंगर लिये बग़ैर दर्शन ना दिये। आप ने गोइंदवाल में बाउली की उसारी करवाई तथा गोइंदवाल को ऐसा धार्मिक व समाजिक केन्द्र बनाया जिसे 'सिक्खी का धुरा' करके जाना गया। लगभग 95 वर्ष की आयु में आप 1574 ई. को गोइंदवाल में ही ज्योति-जोति समा गए और सिक्खी के वारिस के रूप में 'भाई जेठा' जी को चुना, जो बाद में गुरू रामदास जी के नाम से गुरगद्दी पर सुशोभित हुए।

बाणी रचना : 869 शब्द, 17 रागों में

प्रमुख बाणियां : अनंद, पटी तथा 4 वारें - राग गूजरी, सूही, रामकली व मारू में।

❀ गुरू राम दास जी ❀

भाई जेठा जी (गुरू राम दास जी) का जन्म 1534 ई. में चूना मंडी, लाहौर में हुआ। आप जी के पिता का नाम हरदास व माता का नाम दया कौर था। आप का सम्बन्ध सोढी कुल से था और परिवारिक व्यवसाय दुकानदारी था। सात वर्ष की उम्र में ही माता - पिता का साया आप के सिर से उठ गया। आप की ग़रीब नानी आप को अपने पास बासरके ले आई और यहां ही आप की पहली मुलाकात तृतीय गुरू हज़ूर से हुई।

भाई जेठा के लिए पहला कर्म गुरू घर की सेवा थी, पर इसके साथ - साथ वृद्ध नानी की ज़िम्मेवारी का अहसास भी था। इसीलिए जीविका के लिए पहले आप घुंघणियां (उबले चने) बेचते और कमाई नानी के हवाले कर गुरू घर पहुंच जाते। गुरू अमरदास साहिब ने अपनी साहिबज़ादी बीबी भानी के साथ आप का विवाह कर आप को गले से लगाया। उस समय भाई जेठा की आयु 19 वर्ष हो चुकी थी। विवाह के पश्चात आप के घर तीन पुत्र पैदा हुए - बाबा प्रिथीचंद, महादेव व (गुरू) अर्जन देव।

1574 ई. में तीसरे पातशाह ने गुरू राम दास जी को गुरगद्दी की बख्शिश कर गुरू पद पर सुशोभित कर दिया। तीसरे पात्रशाह ने गुरू के चक्क की ज़िम्मेवारी पहले ही आप जी को सौंप दी थी। आप गुरगद्दी पर विराजमान होने के उपरान्त वहां ही जा बसे और शहर में 52 भिन्न - भिन्न व्यवसायों के लोगों को बसाया। गुरू रामदास जी ने दो सरोवर - रामसर व संतोखसर की खुदाई का कार्य भी आरम्भ किया। सिक्ख धर्म के पैरोकारों की संख्या में उस समय तक बहुत बढ़ावा हो चुका था। इसीलिए आपने मसंद प्रथा की स्थापना की। इनका कार्य दूर - दूर के क्षेत्रों में जा कर गुरू नानक के सिद्धांत का प्रचार करना था। गुरू पातशाह ने जब अनुभव कर लिया कि समय पास आ चुका है तो संगत को बुलाया व गुरगद्दी की ज़िम्मेवारी पांचवे पातशाह के रूप में गुरू अर्जन देव जी को सौंप दी।

बाणी रचना : 638 शब्द, 30 रागों में

प्रमुख बाणियां : 8 वारें - सिरी रागु, गउड़ी, बिहागड़ा, वडहंस, सोरठि, बिलावल, सारंग व कानड़ा राग में, घोड़ीआ, पहरे, करहले, वणजारा तथा सूही राग में सिक्ख के 'अनंद कारज' के समय पढ़ी जाने वाली लावां की बाणी।

❋ गुरू अर्जन देव जी ❋

गुरू अर्जन देव जी का प्रकाश 1563 ई. को श्री गुरू रामदास जी व माता भानी जी के घर गोइंदवाल के स्थान पर हुआ। बचपन में आप को अपने नाना तीसरे गुरू अमरदास जी की गोद में खेलने का मौका प्राप्त हुआ। तीसरे पातशाह ने आप के लिए 'दोहिता बाणी का बोहिथा' का उच्चारण करते हुए आने वाले समय की ओर संकेत कर दिया था। फिर नौजवान अवस्था में आप का विवाह माता गंगा जी से सम्पन्न हुआ। आप के घर एक बालक ने जन्म लिया जिसका नाम (गुरू) हरिगोबिंद रखा गया।

1581 ई. में आप पांचवे गुरू के रूप मे गुरगद्दी पर सुशोभित हुए। आप ने गुरू पिता के आरम्भ किए कार्यों को हाथ में लिया और संतोखसर व अमृतसर नाम के सरोवर सम्पूर्ण कर 'चक्क रामदास' का नाम 'अमृतसर' रख दिया तथा सरोवर के बिल्कुल बीच में 'हरिमन्दिर' का निर्माण कर, सिक्खों को उनका केन्द्रीय स्थान अर्पित कर दिया। आप जी ने तरन-तारन, हरिगोबिंदपुर, छेहरटा, करतापुर आदि शहर बसा, सिक्खी के प्रचार व प्रसार के कई केन्द्र स्थापित कर दिए।

गुरू साहिब का सबसे महान कार्य 'आदि ग्रंथ' का सम्पादन था जिससे सिक्ख धर्म की अलग पहचान पर पक्की मोहर लग गई। गुरू अर्जन पातशाह तक सिक्खी का प्रचार व प्रसार इस हद तक बढ़ चुका था कि समय के हाकम व समकालीन धर्म इस धर्म को लोक लहर के रूप में देखने लगे तथा लोक लहर भी ऐसी जो कि शोषित से स्वतंत्रता का प्रसंग सृजना कर रही हो। इसका नतीजा यह निकला कि इस लोक लहर के मुखिया बागी करार कर दिए गए और 1606 ई. को गुरू पातशाह पर कई तरह के इल्ज़ाम लगा कर लाहौर में आप जी को शहीद कर दिया गया। आप सिक्ख धर्म के प्रथम शहीद हुए तथा 'शहीदों के सिरताज' कहलवाये।



बाणी रचना : 2312 शब्द, 30 रागों में

प्रमुख बाणियां : सुखमनी, बारह माहा, बावन अखरी, गुणवंती, अंजुलीआ, बिरहड़े व 6 वारें-राग गउड़ी, गूजरी, जैतसरी, रामकली, मारू व बसंत राग में।

❋ गुरू तेग़ बहादर जी ❋

1621 ई. में गुरू के महल, अमृतसर में छठे गुरू, गुरू हरिगोबिंद साहिब व माता नानकी जी के घर (गुरू) तेग़ बहादर का जन्म हुआ। आप जी की परवरिश की ज़िम्मेवारी बाबा बुढ्ढा जी व भाई गुरदास जी जैसी दैवी रूहों की देख-रेख में हुई। बाबा बुढ्ढा जी ने जहां बचपन से आप जी को नानक नूर से शरसार कर दिया था, वहीं आप को सैनिक गुणों व जंगी हुनरों में भी प्रवीण कर गुरू पिता जैसी शूरवीर शख्सीयत तैयार कर दी थी। भाई गुरदास जी ने आप को धर्मों के दार्शनिक पक्षों का गहरा ज्ञान कराते हुए ब्रज, संस्कृत, पंजाबी आदि भाषाओं से पूरी तरह अवगत करा दिया था।

आप 1635 ई. में छठे पातशाह के साथ कीरतपुर साहिब आ बसे और गुरू पिता के ज्योति-जोति समाने के बाद आप ने अपनी माता नानकी जी व पत्नी गूजरी जी के साथ बाबा बकाला में निवास कर लिया।

आठवें पातशाह गुरू हरिकिशन साहिब ने ज्योति-जोति समाने से पूर्व संगत को 'बाबा बकाले' का हुक्म दिया था। यहां ही भाई मक्खण शाह लुबाणा ने 22 मंजियों पर बैठे पाखण्डियों का पाज उखाड़ कर 'गुरू लाधो रे' का नारा दिया। गुरू साहिब इन ढोंगियों की कलह को देखते हुए कीरतपुर चले गए और वहां से पांच मील की दूरी पर माखोवाल के स्थान पर जगह खरीद कर अनंदपुर शहर बसा दिया।

आप जी ने सिक्खी के प्रचार हित दूर-दूर तक यात्राएं की। इन यात्राओं से सिक्ख धर्म को बहुत बल मिला और सिक्ख धर्म की सिफ्त-सालाह देश के कोने-कोने तक फैल गई।

औरंगज़ेब की कट्टरवादी नीतियों से दुखी हो कशमीरी पंडितों का एक वफद अनंदपुर साहिब पहुंचा और उन्होंने गुरू साहिब के आगे बचाव के लिए विनति की। सिक्ख धर्म के 'जो शरण आए तिस कण्ठ लाए' के वाक्य को सच करते हुए गुरू साहिब 1675 ई. को दिल्ली में अपने तीन सिक्ख-भाई मती दास, भाई सती दास व भाई दयाला जी के साथ शहादत का जाम पी गए और और हिन्दू धर्म की रक्षा करने के कारण आप 'हिन्द की चादर' कहलवाए।



बाणी रचना : 116 शब्द, 15 रागों में।

भगत बाणी

भक्ति लहर दक्षिण भारत में आरम्भ हुई। इसका मान आडवार भगतों को जाता है। उत्तरी भारत में इसका आगमन मध्य युग में हआ। भगत जनों ने असल में एक प्रभु के संदेश को प्रचलित करते हुए कर्म – काण्डी प्रबंध को पूरी तरह नकारने की कोशिश की।

भगत, भट्टों तथा अन्य बाणीकारों की पहचान के लिए जिस भी महापुरूष की बाणी है, उनका नाम भी गुरू ग्रंथ साहिब में साथ ही दर्ज़ किया गया है।

भगत कबीर जी

भगत कबीर जी शिरोमणी भगत हुए हैं। उत्तरी भारत को भक्ति के रंग में रंगने वाली इस पवित्र रूह का जन्म 1398 ई. में बनारस में हुआ। आप जी के जन्म सम्बन्धी कोई स्पष्ट संकेत नहीं मिलता पर आप की परवरिश नीरू नाम के एक श्रमिक मुस्लमान जुलाहा व उसकी पत्नी नीमा द्वारा हुई। कबीर जी ने गृहस्थ जीवन व्यतीत किया और आप के घर संतान भी पैदा हुई।



भगत कबीर जी के जन्म के समय सम्पूर्ण हिन्दुस्तान की धार्मिक व समाजिक व्यवस्था दो श्रेणियों में बंटी हुई थी जिसमें पहली श्रेणी शोषणकारियों की थी और दूसरी श्रेणी शोषितों की। भगत कबीर दूसरी श्रेणी से सम्बन्धित थे। लेकिन उन्हें यह शोषण मंजूर नहीं था। फलस्वरूप भगत कबीर जी की आवाज़ एक मनुष्य की आवाज़ न हो कर समूह की आवाज़ हो गई और यह आवाज़ लोक लहर का रूप धारण कर दंभियों व पाखण्डियों को नंगा कर लोक मानसिकता में एक नयी रूह का आगाज़ करते हुए 1518 ई. में इस संसार से कूच कर गई।

बाणी : कुल जोड़ 532, 16 रागों में

प्रमुख बाणियां : बावन अखरी, सत वार, थिंती

भगत रविदास जी

भगत रविदास का जन्म बनारस के आस – पास 1376 ई. में हुआ। आप के पिता का नाम रघुराय जी व माता का नाम कर्मा देवी जी था। आप का सम्बन्ध चमार

जाति से था। इसका प्रक्टाव गुरू ग्रंथ साहिब में दर्ज़ इनकी बाणी करती है :

नागर जनाँ मेरी जाति बिखिआत चंमारं ॥

(गु.ग्रं.सा. अंग 1293)

उच्च जाति के लोगों द्वारा जो र्दुव्यवहार निम्न वर्ग के साथ किया जाता है, उसका स्पष्ट उल्लेख आपकी बाणी में से हो जाता है। आप जी की बाणी में परमात्मा के प्यार का पात्र बन 'बेगमपुरा' की स्थापना, कर्म-काण्ड की विरोधता, संयमी जीवन और विष-विकारों का बहुत ही खूबसूरत ढंग से वर्णन किया गया है।

बाणी : कुल जोड़ 40 शब्द, 16 रागों में

❋ भगत धन्ना जी ❋

भगत धन्ना जी राजस्थान के किसान परिवार से सम्बन्धित थे जिन्हें जाट कबीले के तौर पर भारतीय समाज में मान्यता प्राप्त है। आप का जन्म टांक इलाके के गांव धुआन में 1416 ई. में हुआ। धन्ना जी ने गृहस्थी जीवन व्यतीत किया और परिवारिक कार्य खेतीबाड़ी ही अपनाया। एक जाट और दूसरा किसान का जीवन होने के कारण बारीक चलाकियों से उनकी ज़िन्दगी कोसों दूर थी।



भगत जी ने अपनी बाणी में स्पष्ट कर दिया है कि मुझे धरती के आसरे (प्रभु) की प्राप्ति संतो, महापुरूषों की संगत के कारण ही हुई है :

धन्नै धनु पाइआ धरणीधरु मिलि जन संत समानिआ ॥

(गु.ग्रं.सा. अंग 487)

बाणी : कुल जोड़ 3, 2 रागों में

❋ भगत पीपा जी ❋

भगत बाणी शीर्षक के अधीन दर्ज़ बाणियों में भगत पीपा जी का एक शब्द राग धनासरी में गुरू ग्रंथ साहिब के अंग 695 पर दर्ज़ है। यह राजस्थान के राजपूत राजा थे और एक छोटी सी रियासत गगरौन गढ़, इनके अधिकार में थी। बहुत जल्दी ही राजशाही की विलासिता से इनका मन भर गया और इनकी उदासीनता ने



घर वालों की चिन्ता में बढ़ावा किया। इन्हें समझाने की प्रक्रिया शुरू हुई लेकिन असफल रही। इस अवस्था में आप का मेल स्वामी रामानंद जी से हुआ तथा आप उनके शिष्य बन गये।

❋ भगत परमानन्द जी ❋

भगत परमानन्द जी का एक शब्द राग सारंग में गुरू ग्रंथ साहिब के अंग 1253 पर अंकित है। मध्य काल के आप उच्च कोटि के भगत – जन थे।



भगत परमानन्द जी का जो शब्द गुरू ग्रंथ साहिब में दर्ज़ है, उसमें मनुष्य को केन्द्रीय बना कर उसके भीतर के विकारों का व्याख्यान करके उसे असली जीवन की प्राप्ति के लिए सचेत किया है और उसका राह साध संगत की सेवा व उपमा बताया है।

❋ भगत सूरदास जी ❋

भगत सूरदास जी एक ही ऐसे भगत हुए हैं जिनकी केवल एक पंक्ति गुरू अर्जन पातशाह के शब्द के साथ जुड़ कर गुरू ग्रंथ साहिब में सुशोभित है और इसे शीर्षक 'सारंग महला ५ सूरदास' के नीचे दिया हुआ है।



भगत सूरदास का सम्बन्ध अकबर के समय के राज्य संदीला से है और आप अकबर के प्रमुख अहलकार थे। इनका जन्म ब्राहमण परिवार में हुआ था।

❋ भगत सैण जी ❋

गुरू ग्रंथ साहिब के अंग 695 पर राग धनासरी में भगत सैण जी का एक शब्द अंकित है। भगत सैण जी का जन्म 1390 ई. में हुआ व इनका अंतिम समय 1440 ई. है। आप बिदर के राजा के शाही नाई थे और उस समय के प्रमुख संत ज्ञानेश्वर जी के परम सेवक थे।

आप जी के परोपकारी स्वभाव तथा प्रभु के प्यारे के रूप में प्राप्त की हुई हरमन – प्यारता का बहुत खूबसूरत चित्रण गुरू ग्रंथ साहिब व भाई गुरदास जी की वारों में मिलता है। यह इस बात को रूपमान करती है कि प्रभु की कृपा के राह में

जाति या जन्म का कोई अर्थ नहीं है, उसका प्यारा होने के लिए सर्मपण प्रमुख गुण है।

❋ भगत भीखन जी ❋



भगत भीखन जी की बाणी भी गुरू ग्रंथ साहिब के अंग 659 में दर्ज़ है। उनके दो शब्द राग सोरठि में है।

आप का जन्म लखनऊ के गांव काकोरी में 1480 ई. में हुआ और आप इस्लाम धर्म के सूफी प्रचारक थे। आपका अंतिम समय 1574 ई. था।

❋ भगत जै देव जी ❋

श्री गुरू ग्रंथ साहिब में दर्ज़ 'भगत बाणी' के रचनहारों में भगत जै देव जी सब से बड़ी उम्र के थे। आप का जन्म 1170 ई. में बंगाल के बीर भूमि ज़िले के गांव केंदली में हुआ। आप कनौज निवासी भोजदेव ब्राहमण व रमादेवी के पुत्र थे। आरम्भ में जै देव वैश्नव मतधारी कृष्ण उपासक थे लेकिन तत्तवेता साधुओं की संगत के कारण आप एक करतार के अनिन्न सेवक हो गए।

भगत जै देव जी की बाणी के अनुसार परमात्मा की प्राप्ति में दुनियावी अवगुण या हउमै रूकावट बन जाते हैं और इसकी निवृति का एक ही रास्ता मन बच कर्म की शुद्धता है।

बाणी : 2 शब्द – गूजरी व मारू राग में

❋ भगत बेणी जी ❋

भगत बेणी जी का जन्म 15वीं सदी में मध्य प्रदेश के एक ब्राहमण परिवार में हुआ।

गुरू ग्रंथ साहिब में जो आप की बाणी दर्ज़ है, उससे स्पष्ट होता है कि आप का सम्बन्ध निरगुणवादी भक्ति के साथ है और हो सकता है कि भक्ति लहर के उत्तर भारत में दाखिल होने वालों के प्रमुखों में आप हो।

आप की रचना में गहरी दार्शनिकता और समाजिक चित्र का रूप सामने आता है जो धार्मिक कर्म-काण्डों का सख्ती से विरोध ही नहीं करता बल्कि ब्राहमण एवं योगी परम्परा द्वारा किए प्रपंचों को भी नंगा करने में समर्थ था।

बाणी रचना : 3 शब्द, 3 रागों में

भगत नामदेव जी

भगत नामदेव जी का जन्म 1270 ई. में महाराष्ट्र के ज़िला सतारा के गांव नरसी बामणी में हुआ। भारतीय वर्ण-वर्ग में आप की जाति छींबा, अछूत प्रवान की जाती थी। आप के पिता का नाम दम सेती व माता का नाम गोना बाई था। आप ने बचपन से ही परमात्मा से प्यार करने की कला अपने पिता से प्राप्त की।



भगत जी परमात्मा के साथ एकसुर होकर स्वयं हरि का रूप हो गये थे, लेकिन उस समय की जति प्रथा प्रबन्ध में उलझे हुए समाज में आप का कई बार अपमान हुआ, जिसका स्पष्ट उल्लेख आपकी बाणी में मिलता है। अंतिम दिनों में आप पंजाब आ गए व गुरदासपुर ज़िले के गांव घुमाण में रैन-बसेरा किया। यहां ही आप ने 1350 ई. में परलोक गमन किया।

बाणी : कुल जोड़ 61 शब्द, 18 रागों में

भगत रामानन्द जी

आप जी का जन्म 1366 ई. में प्रयाग, उत्तर प्रदेश में एक ब्राहमण परिवार में हुआ। आप जी की माता शसीला जी तथा पिता भुरि करम जी थे।

भगत रामानन्द जी ने उदारवादी सम्प्रदाय की नींव रखी। आप ने शूद्रों भाव तथाकथित अछूतों व अन्य छोटी जाति के भगतों को अपने सम्प्रदाय में शामिल किया और उन्हे हृदय से लगा भक्ति मार्ग में उनकी अगुवाई की। रामानन्द जी का सब से खूबसूरत पहलू यह था कि आप ने संस्कृत का त्याग कर लोक-भाषा में अपने विचार पेश किए, बेशक संस्कृत में भी इनके कुछ ग्रंथ मिलते हैं।

आप ने अपना अंतिम समय काशी के गंगा घाट के रमणीक स्थान पर व्यतीत किया और यहां ही 1467 ई. में परलोक गमन कर गए।

गुरू ग्रंथ साहिब में आपका एक शब्द अंग 1195 पर राग बसंत में दर्ज़ है।

❋ भगत सधना जी ❋

गुरू ग्रंथ साहिब में भगत सधना जी का एक शब्द राग बिलावल में दर्ज़ है। आप मुस्लिम परिवार से सम्बन्धित थे लेकिन बाद में किसी हिन्दू भगत के मेल से आप ने शरीयत को तिलांजली दी। आप सेहबान, ज़िला सिंध (अब पाकिस्तान) के रहने वाले थे और आप का पेशा कसाई था। आपको प्रभु के प्यारों का मिलाप परमात्मा की भक्ति की ओर ले गया तथा आप प्रभु की दरगाह में कबूल हुए। आप ने भारतीय परम्परा में प्रचलित मुक्ति धारणा से विपरीत जीवन मुक्ति के संकल्प का प्रचार किया और इसके लिए 'अऊसर लजा' शब्द का प्रयोग किया :



मै नाही कछु हउ नाही किछु आहि न मोरा।।
अउसर लजा राखि लेहु सधना जन तोरा ।।

(गु.ग्रं.सा. अंग 858)

❋ भगत त्रिलोचन जी ❋

भगत त्रिलोचन का जन्म 1267 ई. में महाराष्ट्र राज्य के ज़िला शोलापुर के गांव बारसी में हुआ।

गुरू ग्रंथ साहिब में दर्ज़ आप की बाणी में जहां झूठे आडंबरो की घोर निषेधी की है, वही भेषों-पारवण्डों का त्याग करने पर ज़ोर डालते हुए परमात्मा के घर का वासी बनने की ओर उत्साहित किया गया है।

बाणी : कुल जोड़ 4, 3 रागों में

❋ शेरव फरीद जी ❋

चिश्ती सिलसिले के प्रमुरव बाबा फरीद जी का जन्म 1173 को गांव रवोतवाल ज़िला मुल्तान (अब पाकिस्तान) में शेरव जमालुदीन सुलेमान के घर हुआ। आप जी



की माता का नाम मरीयम था। आप की परिवारिक पृष्ठ – भूमि गज़नी के इलाके से जुड़ती है। लेकिन नित्य की बदअमनी के कारण आप के बज़ुर्ग मुल्तान के इस गांव में आ बसे थे। बाबा फरीद के ऊपर इस्लामी रंगत लाने में सब से बड़ा योगदान आप की माता का था। आप के तीन विवाह हुए तथा आप के घर नौ बच्चे पैदा हुए। आप की बड़ी पत्नी हिन्दुस्तान के बादशाह बनबन की पुत्री थी, जिसने हर प्रकार के सुख – आराम का त्याग करके सारी उम्र फकीरी वेष में व्यतीत कर दी।

चिश्ती सिलसिले के प्रसिद्ध सूफी फकीर ख्वाजा कुत्बदीन काकी आप जी के मुरशद थे। इनकी मौत के बाद बाबा फरीद जी को मुखिया नियुक्त कर दिया गया। आप ने अपना ठिकाना पाकपटन बना लिया। यहां ही 1265 ई. में आप का देहान्त हो गया।

सिक्ख धर्म के संस्थापक गुरू नानक पातशाह जब अपनी उदासियों के दौरान पश्चिम की ओर गए तो आप जी ने उस समय के शेख फरीद जी के गद्दी – नशीन शेख ब्रहम, जो फरीद जी के पश्चात 11वें स्थान पर थे, को मिले। शेख ब्रहम ने अपने बज़ुर्ग मुरशद की बाणी गुरू साहिब के हवाले कर दी, जो पंचम पातशाह ने आदि ग्रंथ के सम्पादन के समय इस पवित्र ग्रंथ का हिस्सा बनाई।

बाणी रचना : 4 शब्द, 2 रागों में तथा 112 सलोक

कुल जोड़ : 116

भट बाणी

'भट' शब्द प्राय: उन लोगों के लिए प्रयोग किया जाता है जो अपने मालिक की ओर से लड़ते थे तथा मालिक के प्रति वफादारी का प्रक्टाव करते हुए ज़िन्दगी और मौत को एक समान स्वीकार करते थे। इसके अतिरिक्त इस शब्द का प्रयोग उन लोगों के लिए भी किया जाता था जो महाबली योद्धाओं तथा सूरवीरों का गुणगान करते थे।

गुरू नानक पातशाह के फैले प्रताप की महिमा जब भट्टों के कानों में पड़ी तो वे भी गुरू दरबार में पहुंचे। गुरू साहिबान जैसी ईश्वरीय रूहों के दर्शन करके इनकी आंखें मुन्द गई, ये धन्य – धन्य कर उठे और फिर कीर्ति व वीरता के प्रक्टाव की अनेक उदाहरणें हैं। भट्टों ने गुरू साहिबान की उस्तति में शब्द रचना भी की जो गुरू ग्रंथ साहिब में मौजूद है और साथ ही जंगों – युद्धों में शहादतें भी दीं।

भट बाणी : कुल जोड़ 123



❋ भट कलसहार जी ❋

बाणी : कुल जोड़ 54

भट कलसहार जी ने पांचों गुरू साहिबान जी की स्तुति में सवैये उच्चारण किए हैं। आप के पिता जी का नाम भट चौखा जी था जो कि भट भिखा जी के छोटे भाई थे। भट गयंद जी आप के भाई थे। कई सवैयों में इन्होंने अपना नाम कलसहार के स्थान पर, उप – नाम टल या कलह भी प्रयोग किया है।

❋ भट जालप जी ❋

बाणी : कुल जोड़ 5

भट जालप जी को 'जल' नाम से भी सम्बोधित किया गया है। आप जी के पिता भट भिखा जी थे। आप जी के छोटे भाई भट मथुरा जी व भट कीरत जी थे, जिनके सवईये भी श्री गुरू ग्रंथ साहिब में दर्ज हैं। आप जी के लेखन अनुसार आप जी के हृदय में जो सत्कार गुरू घर से तथा विशेषतय गुरू अमर दास जी के साथ था, उसकी सीमा का अनुमान लगाना कठिन था।

❋ भट कीरत जी ❋

बाणी : कुल जोड़ 8

भट कीरत जी भट्टों की टोली के मुखिया भिखा जी के छोटे सपुत्र थे। आप जी की बाणी जहां बहुत ही दिल को खींचने वाली है, वहीं उसका रूप श्रद्धामयी है। जहां आप ने बाणी के द्वारा गुरू स्तुति की, वहीं गुरू हरिगोबिन्द जी की फ़ौज में शामिल हो कर मुग़लों के विरूद्ध हुए युद्धों में शाही जलाल का प्रदर्शन करते हुए

शहादत का जाम भी पिया।

❀ भट भिखा जी ❀

बाणी : कुल जोड़ 2

भट भिखा जी, भट रईआ जी के सपुत्र थे एवं आप जी का जन्म सुल्तानपुर में हुआ था। आप जी के सपुत्र–भट कीरत जी, मथुरा जी व जालप जी ने भी गुरू अमरदास जी, गुरू राम दास जी तथा गुरू अर्जन देव जी की बहुत ही सुन्दर शब्दों में स्तुति की है।

❀ भट सलह जी ❀

बाणी : कुल जोड़ 3

भट सलह जी, भट भिखा जी के छोटे भाई सेखे के सुपुत्र व भट कलह जी के भाई थे।

❀ भट भलह जी ❀

बाणी : कुल जोड़ 1

भट भलह जी, भट सलह जी के भाई व भिखा जी के भतीजे थे।

❀ भट नलह जी ❀

बाणी : कुल जोड़ 16

भट नलह जी को 'दास' के उप–नाम से भी जाना जाता है। गोइन्दवाल की पवित्र धरती को आप बैकुण्ठ का दर्जा देते हैं।

❀ भट गयंद जी ❀

बाणी : कुल जोड़ 13

भट गयंद जी, भट कलसहार जी के छोटे भाई व भट्टों के मुखिया भट भिखा

जी के एक भाई चौखे के सपुत्र थे। गुरू साहिबान की स्तुति में रचे भट गयंद जी के सवईयों में सिक्ख की अपने गुरू प्रति सच्ची आस्था रूपमान होती है।

❋ भट मथुरा जी ❋

बाणी : कुल जोड़ 14

भट मथुरा जी, अपने भाइयों भट कीरत जी व भट जालप जी तथा अपने पिता भट भिखा जी की तरह गुरू साहिब को परमात्मा स्वरूप मानते थे।

❋ भट बलह जी ❋

बाणी : कुल जोड़ 5

भट बलह जी, भट भिखा जी के भाई सेखे के सपुत्र थे।

❋ भट हरिबंस जी ❋

बाणी : कुल जोड़ 2

भट हरिबंस जी ने विलक्षण शैली में गुरू ज्योति की महिमा व महत्त्वता वर्णन करके उस अखंड ज्योति के प्रति अपनी आस्था प्रक्ट की है।

गुरसिक्ख बाणीकार

श्री गुरू ग्रंथ साहिब के बाणीकारों की जो प्रवानित तरतीब है, उसमें 4 महापुरूषों – भाई मरदाना जी, बाबा सुंदर जी, भाई सत्ता जी व भाई बलवण्ड जी की बाणी है। इन्हें गुरू घर के उच्च – सुरति वाले श्रद्धालु या गुरसिक्ख के तौर पर जाना जाता है।

❋ भाई मरदाना जी ❋



भाई मरदाना जी सिक्ख धर्म के प्रथम अनुयायी, नानक पातशाह के सच को पहचानने वाले और पूरी ज़िन्दगी साथ निभाने वाले गुरू के पूरे – सूरे गुरसिक्ख 1459 ई. को गुरू की

ही नगरी तलवंडी में भाई बादरे के घर माई लख्खो की गोद में पैदा हुए।

गुरू नानक का आलौकिक नाद व भाई मरदाना की रबाब के सुर पांच सदियों से सिक्ख इतिहास के पैरोकारों का हृदय बनी हुई है।

पश्चिम की अंतिम यात्रा की वापसी के समय अफग़ानिस्तान के खुरम्म नदी के तट पर इस पुरूष ने गुरू नानक साहिब की झोली में अंतिम श्वास लिए। गुरू साहिब ने भाई मरदाना की इच्छा अनुसार अपने हाथों से उनका अंतिम संस्कार किया।

गुरू ग्रंथ साहिब में बिहागड़े की वार में तीन सलोक दर्ज़ हैं, जिनका शीर्षक है – सलोक मरदाना १, मरदाना १ व मरदाना १।

इस बाणी में विष – विकार पैदा करने वाले नशों को छोड़ सच्चे नाम के नशे के साथ शरसार होने की शिक्षा है।

बाबा सुंदर जी

बाबा सुंदर जी का सम्बन्ध गुरू अमरदास जी के परिवार से है। आप गुरू अमरदास जी के साहिबज़ादे बाबा मोहरी जी के पौत्र व भाई अनंद जी के पुत्र थे। इस तरह आप गुरू अमरदास जी के पड़ – पौत्र हुए। बाबा सुंदर जी की बाणी 'सदु' राग रामकली में गुरू ग्रंथ साहिब के अंग 923 पर सुशोभित है।

राऐ बलवण्ड व भाई सत्ता

भाई बलवण्ड व भाई सत्ता गुरू घर के सुप्रसिद्ध कीर्तनकार थे। भाई मरदाना जी के बाद सिक्ख धर्म में इन दोनों को बेहद प्यार व सत्कार प्राप्त हुआ।

इनकी रचना जहां इन्हें बड़ा विद्धान व युग – पुरूष के रूप में स्थापित करती है, वहीं इनकी रचना से यह भी प्रक्ट होता है कि यह अभिन्न सिक्ख ही नहीं थे बल्कि गुरू सिद्धांत की पूर्ण तरह चेतनता वाले भी थे। गुरू सिद्धांत व गुरू दरबार की शोभा ने इनकी बाणी को आध्यात्मिकता के साथ – साथ एक ऐतिहासिक स्रोत के रूप में भी मान्यता दिलाई है।

इन दोनों महापुरूषों की बाणी की कुल 8 पउड़ियां हैं जिनमें से पांच पउड़ियों की रचना राए बलवण्ड जी की हैं और तीन पउड़ियों के रचियता भाई सत्ता जी हैं यह रचना रामकली राग में अंकित है तथा इसका शीर्षक है :



रामकली की वार राइ बलवंड तथा सतै डूमि आखी।

राए बलवण्ड जी की पउड़ियों में गुरू नानक पातशाह द्वारा भाई लहिणा को गुरगद्दी देकर गुरू अंगद के रूप में स्थापित करना और गुरू अंगद देव जी के समय सिक्खी के विकास के रूप का प्रक्टाव है।

भाई सत्ते द्वारा रचित पउड़ियों में गुरू अंगद देव जी से लेकर पंचम पातशाह हज़ूर तक के काल के सफर को रूपमान किया गया है।



गुरू ग्रंथ साहिब के उपदेश

युगों युग अटल श्री गुरू ग्रंथ साहिब जी के भीतर का उपदेश परस्पर प्रेम, प्यार, निर्भयता, निरवैरता, दया, परोपकार, धार्मिक सहनशीलता, मानव समानता आदि अलौकिक गुणों से भरपूर है तथा नाम जपना, किरत करना, वंड छकना व सेवा, संतोष, हुकम मानना आदि के लिए प्रेरणा का स्रोत है।

गुरू ग्रंथ साहिब जी में किसी एक फिरके, जमात या देश की बात नहीं की गई, बल्कि इनका उपदेश तो सभी वर्गों, देशों व मनुष्य मात्र के लिए सांझा है। गुरमति का सिद्धांत बहुत स्पष्ट है कि हर कोई सच के मार्ग पर चलता हुआ अपने-अपने धर्म की पालना करे और इसी में सारी मानवता का भला मांगा गया है। गुरू पातशाह का फरमान है :

जगतु जलंदा रखि लै आपणी किरपा धारि ॥
जितु दुआरै उबरै तितै लैहु उबारि ॥

(गु.ग्रं.सा. अंग 853)

सिक्ख गुरू साहिबान ने गुरू ग्रंथ साहिब के उपदेशों को केवल सिद्धांतों तक ही

सीमित नहीं रखा बल्कि इन्हें अमली जीवन में ढालने को ज्यादा महत्त्वता दी है। सिद्धांत तथा अमल की एकसुरता का यह हाल कि सिक्ख धर्म जीवन को गुरू ग्रंथ साहिब के उपदेशों के आधार पर रचा हुआ देखता है।

सिक्ख धर्म से सम्बन्धित एक विदेशी विद्वान का कथन है कि गुरू ग्रंथ साहिब के उपदेशों से यह पूरी तरह सिद्ध हो जाता है कि सिक्ख धर्म संसार में एक नया तथा बिल्कुल भिन्न धर्म है। असल में यह धर्म ऐसा है कि जिसे जीवन में आसानी से अमल में लाया जा सकता है। इस धर्म को मनुष्य जीवन के अध्यात्मिक लाभ से देखा जाए तो यह सारे संसार में लगभग अपनी किस्म का आप ही है।

❋ एक कर्ता में विश्वास ❋

सिक्ख धर्म का मूल अकाल पुरख है। अकाल पुरख के स्वरूप एवं गुणों का व्याख्यान प्रमुख तौर पर मूल-मंत्र में से ही मिलता है। गुरू ग्रंथ साहिब के आरम्भ में दर्ज़ मूल मंत्र इस प्रकार है :

ੴ सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु
अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥

ੴ	–	अकाल पुरख केवल एक है, उस जैसा और कोई नहीं तथा वह हर जगह एक रस व्यापक है।
सतिनामु	–	उसका नाम स्थायी आस्तित्व वाला व सदा के लिए अटल है।
करता	–	वह सब कुछ बनाने वाला है।
पुरखु	–	वह सब कुछ बना कर उसमें एक रस व्यापक है।
निरभउ	–	उसे किसी का भी भय नहीं है।
निरवैरु	–	उसका किसी से भी वैर नहीं है।
अकाल मूरति	–	वह काल रहित है, उसकी कोई मूर्ति नहीं, वह समय के प्रभाव से मुक्त है।
अजूनी	–	वह योनियों में नहीं आता, वह ना जन्म लेता है व ना ही मरता है।
सैभं	–	उसे किसी ने नहीं बनाया, उसका प्रकाश अपने आप से है।
गुर प्रसादि	–	अकाल पुरख गुरू की कृपा द्वारा मिलता है।

ੴ ਸਤਿਨਾਮੁ ਕਰਤਾ ਪੁਰਖੁ ਨਿਰਭਉ ਨਿਰਵੈਰੁ ਅਕਾਲ ਮੂਰਤਿ ਅਜੂਨੀ ਸੈਭੰ ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ

❋ नाम जपना ❋

नाम गुरू ग्रंथ साहिब का प्रमुख उपदेश है। इसे सृजनहार, पालनहार व सर्व – समर्थ हस्ती के लिए भी प्रयोग किया गया है। नाम के बराबर अन्य कोई पदार्थ नहीं है, यह सब से श्रेष्ठ है।

नाम तुलि कछु अवरुन होइ ॥
नानक गुरमुखि नामु पावै जनु कोइ ॥

(गु.ग्रं.सा. अंग 265)

नाम परमात्मा का दूसरा रूप है।

नाउ तेरा निरंकारुहै नाइ लइऐ नरकि न जाईऐ ॥

(गु.ग्रं.सा. अंग 465)

नाम अभ्यास से भाव है अहसास पैदा करना (Practising presence of God)। नाम की प्राप्ति 'गुरप्रसादि' भाव गुरू की कृपा द्वारा हो सकती है।

❋ किरत करना ❋

किरत करनी से भाव है उपजीविका के लिए नेक कमाई करनी जिसे आम तौर पर धर्म या 'दस नहुंआ' की कमाई भी कहा जाता है। गुरू नानक साहिब ने अपनी यात्राओं के बाद करतारपुर में अपने हाथों से खेतीबाड़ी की, हल चलाया, लंगर चलाए व ज़रूरतमंदों की मदद की आप जी के बचन हैं :

घालि खाइ किछु हथहु देइ ॥
नानक राहु पछाणहि सेइ ॥

(गु.ग्रं.सा. अंग 1245)

हाथ पाउ करि कामु सभु चीतु निरंजन नालि ॥

(गु.ग्रं.सा. अंग 1376)

❋ वंड छकना ❋

अपने द्वारा की हुई किरत कमाई को वंड छकना (बांट कर खाना) ही गुरमति में प्रवान है। गुरू साहिबान ने लंगर की प्रथा को शुरू करके 'वंड छकण' के सिद्धांत को अमली रूप दिया। लंगर में संगत एक ही पंक्ति में बैठ कर बिना किसी भेद भाव के बैठ कर प्रशाद लेती है। गुरमति इस बात की लखायक है कि जो कुछ हम दातें भोग रहे है, वह सभी उस दाता की दी हुई हैं :

तू दाता दातारु तेरा दिता खावणा ॥

(गु.ग्रं.सा. अंग 652)

इसीलिए गुरू साहिब राह दिखाते हैं :

खावहि खरचहि रलि मिलि भाई ॥
तोटि न आवै वधदो जाई ॥

(गु.ग्रं.सा. अंग 186)

❋ हुक्म ❋

इको नामु हुकमु है नानक सतिगुरि दीआ बुझाइ जीउ ॥

(गु.ग्रं.सा. अंग 72)

संसार में हर चीज़ हुक्म में ही होती है। इस प्रकार हुक्म कार्य, कर्म एवं कर्म - फल निर्धारित करने वाला नियम भी प्रवान किया जाता है।

.... हुकमै अंदरि सभु को बाहरि हुकम न कोइ ॥
नानक हुकमै जे बुझै त हउमै कहै न कोइ ॥

(गु.ग्रं.सा. अंग 1)

हुक्म को बूझने के राह में हउमै भी रूकावट है।

हउमै नावै नालि विरोधु है दुइ न वसहि इक ठाइ ॥

(गु.ग्रं.सा. अंग 560)

❋ हउमै ❋

जीवात्मा व परमात्मा एक जगह पर रहते हुए भी, अहंकार के कारण एक दूसरे के साथ एकजुट नहीं हो सकते :

धन पिर का इक ही संगि वासा विचि हउमै भीति करारी ॥

(गु.ग्रं.सा. अंग 1263)

दोनों के बीच हउमै की दीवार खड़ी है तथा इस दीवार के गिरने के साथ ही परमात्मा की प्राप्ति हो सकती है:

हउमै जाई ता कंत समाई ॥

(गु.ग्रं.सा. अंग 750)

हउमै एक बड़ा रोग है और गुरू के शब्द की कमाई से इससे छुटकारा पाया जा सकता है :

हउमै दीरघ रोगु है दारूभी इसु माहि ॥
किरपा करे जे आपणी ता गुर का सबदु कमाहि ॥
नानकु कहै सुणहु जनहु इतु संजमि दुख जाहि ॥

(गु.ग्रं.सा. अंग 466)

❋ अरदास ❋

अरदास सिक्ख धर्म का एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण सिद्धांत है। सिक्ख धर्म में इसके बिना कोई भी कार्य सम्पन्न नहीं होता।

तीने ताप निवारणहारा दुख ह्नता सुख रासि ॥
ता कउ बिघनु न कोऊ लागै जा की प्रभ आगै अरदासि ॥

(गु.ग्रं.सा. अंग 714)

सिक्ख के लिए मुश्किल से मुश्किल समस्या में भी गुरू की टेक को कायम रखने का आदेश है। यही खुशियों व गमों को एक जैसा तस्लीम करने का सिद्धांत है।

जीअ की बिरथा होइ सु गुर पहि अरदासि करि ॥
छोडि सिआणप सगल मनु तनु अरपि धरि ॥

(गु.ग्रं.सा. अंग 519)

❋ सतसंगत ❋

सतसंगति कैसी जाणीऐ ॥
जिथै इको नामु वखाणीऐ ॥

(गु.ग्रं.सा. अंग 72)

सतसंगत में ही प्रभु के नाम (ज्ञान) का प्रकाश होता है।

धनु धन्नु सतसंगति जितु हरि रसु पाइआ
मिलि जन नानक नामु परगासि ॥

(गु.ग्रं.सा. अंग 10)

❋ मुक्ति ❋

गुरू ग्रंथ साहिब में मुक्ति के साथ 'जीवन' शब्द भी आता है। इसका अर्थ है अपने जीवन में ही मुक्त होना।

जीवन मुकति सो आखीऐ मरि जीवै मरीआ ॥

(गु.ग्रं.सा. अंग 449)

सिक्ख ने इस संसार में रहते हुए कमल जैसी निर्लेप ज़िन्दगी व्यतीत करते हुए कर्मशील रहना है :

जैसे जल महि कमलु निरालमु मुरगाई नै साणे ॥

(गु.ग्रं.सा. अंग 938)

मनुष्य समानता

मंदा किस नो आखीऐ जाँ सभना साहिबु इेकु ॥

(गु.ग्रं.सा. अंग 1238)

गुरमति सारे जीवों को एक परमात्मा का पैदा किया मानती है।

अवलि अलह नूरुउपाइआ कुदरति के सभ बंदे ॥
इेक नूर ते सभु जगु उपजिआ कउन भले को मंदे ॥

(गु.ग्रं.सा. अंग 1349)



सेवा – सिमरन

सेवा व सिमरन सिक्ख धर्म के मूल सिद्धांत है। सिमरन द्वारा हृदय के बर्तन में संग्रहित किए प्रभु गुणों की, गुरू के हुक्म में रह कर, शुभ कर्मों द्वारा ज़रूरतमंद व दुखी लोकाई के भले के लिए प्रयोग करना ही असली सेवा है।

निरंकार के सरगुण स्वरूप की भक्ति का नाम 'सेवा' है व 'सिमरन' उसके निरगुण स्वरूप की उपासना है :

विचि दुनीआ सेव कमाईऐ ॥ ता दरगह बैसणु पाईऐ ॥

(गु.ग्रं.सा. अंग 26)

हरि हरि सिमरहु अगम अपारा ॥

जिसु सिमरत दुखु मिटै हमारा ॥

(गु.ग्रं.सा. अंग 698)

❁ औरत का सम्मान ❁

सिक्ख धर्म के संस्थापक गुरू नानक देव जी 'आसा की वार' में स्त्री के बारे में व्याख्यान करते हैं कि स्त्री द्वारा ही संसार चलता है क्योंकि वह सन्तान को जन्म देती है और फिर स्त्री को बुरा क्यों कहा जाए जो राजा, महाराजाओ की जननी है।

सो किउ मंदा आखीऐ जितु जंमहि राजान ॥

(गु.ग्रं.सा. अंग 473)



❁ दहेज ❁

गुरबाणी उपदेश देती है कि सिक्ख को अपनी बच्ची के विवाह समय क्या दहेज एकत्रित करना चाहिए।

हरि प्रभु मेरे बाबुला हरि देवहु दानु मै दाजो।।

हरि कपड़ो हरि सोभा देवहु जितु सवरै मेरा काजो।।

(गु.ग्रं.सा. अंग 78)

❁ संतोष ❁

गुरबाणी संतोष के नैतिक गुण को मनुष्य के मन का हिस्सा बनाने का उपदेश देती है।

धौलु धरमु दइआ का पूतु ॥
संतोखु थापि रखिआ जिनि सूति ॥

(गु.ग्रं.सा. अंग 3)

❋ गुरमुख ❋

गुरू ग्रंथ साहिब में गुरमुख के साथ को बड़प्पन दिया गया है कि उससे दोस्ती करके जीव के जन्म-मरण का दुख काटा जाता है और वह आत्मिक आनन्द की प्राप्ति करता है :

गुरमुख सउ करि दोसती सतिगुर सउ लाइि चितु ॥
जंमण मरण का मूलु कटीऐ ताँ सुखु होवी मित ॥

(गु.ग्रं.सा. अंग 1421)

❋ मनमुख ❋

मनमुख वह है जो अपने मन के पीछे लग कर चलता है और गुरमति के विपरीत चलता है। इसीलिए ऐसे लोगों से मेल-मिलाप का कोई लाभ नहीं तथा उनसे बिछुड़ना ही अच्छा है।

नानक मनमुखा नालो तुटी भली जिन माइिआ मोह पिआरु॥

(गु.ग्रं.सा. अंग 314)

❋ सहज अवस्था ❋

माया के तीन गुण-तमो, रजो व सतो, से ऊपर मन की एक चौथी अवस्था है जिसे सहज अवस्था का नाम दिया गया है :

चउथे पद महि सहजु है गुरमुखि पलै पाइि ॥

(गु.ग्रं.सा. अंग 68)

सहज अवस्था मन के पूरे टिकाव वाली अवस्था है जब सारी चिन्ताएं व लालसाएं खत्म हो जाती हैं :

सूख सहज अरुघनो अन्नदा गुर ते पाइिओ नामु हरी ॥

(गु.ग्रं.सा. अंग 822)

इस अवस्था पर पहुंच कर जीव की सुरति मालिक प्रभु से जुड़ जाती है तथा उसकी भटकन समाप्त हो जाती है।

❋ आनंद ❋

आनंद से भाव है आत्मिक उल्लास। यह उल्लास स्थायी होता है और इसकी

प्राप्ति तब होती है जब प्रभु की बख्शिश के कारण जीव सतसंगत में गुरबाणी श्रवण करने के लिए जुड़ता है

साधसंगि जउ तुमहि मिलाइिए तउ सुनी तुमारी बाणी ॥
अनदु भइिआ पेखत ही नानक प्रताप पुरख निरबाणी ॥

(गु.ग्रं.सा. अंग 614)

गुरू अमरदास जी की बाणी 'अनंदु' इसी बात का प्रतीक है। गुरसिक्ख सदा 'चढ़दी कला' में रहता है क्योंकि उसकी मंज़िल का निशाना सच्चे गुरू द्वारा दर्शाए हुए राह पर चलते हुए सतिगुरू को मिल कर आनंद की प्राप्ति करना ही है:

अन्नदु भइिआ मेरी माइे सतिगुरू मै पाइिआ ॥
सतिगुरुत पाइिआ सहज सेती मनि वजीआ वाधाईआ ॥

(गु.ग्रं.सा. अंग 917)

इसीलिए सिक्ख के हर कार्यक्रम की समाप्ति पर इस 'अनंदु' बाणी में से छह पउड़ियों का पाठ किया जाता है। गुरू के बताए हुए मार्ग पर चल कर ही आनंद की प्राप्ति हो सकती है और हृदय घर में आत्मिक आनंद बसने से जीव की सारी भटकना समाप्त हो जाती है :

अनदु सुणहु वडभागीहो सगल मनोरथ पूरे ॥

(गु.ग्रं.सा. अंग 922)

❀ अमृत ❀

प्रभु का नाम ही सारे सुखों का खज़ाना है और इस अमृत-जल को पीने से माया की सारी भूख उतर जाती है :

नानक अंमृत नामु सदा सुखदाता
पी अंमृतु सभ भुख लहि जावणिआ ॥

(गु.ग्रं.सा. अंग 119)

प्रभु का अमृत नाम सभी चिन्ताओं को दूर करने वाला है। गुरबाणी अमृत-मयी बचनों से भरपूर है और जो गुरू ग्रंथ साहिब के 'चरनी' लग जाता है भाव गुरबाणी पढ़ता है, वह जीव आत्मिक जीवन देने वाले नाम रूपी अमृत को ही पीता है :

अंमृत बचन सतिगुर की बाणी
जो बोलै सो मुखि अंमृतु पावै ॥

(गु.ग्रं.सा. अंग 494)

❋ पाप ❋

गुरमति पाप कर्मों से बच कर दयालु प्रभु की शरण में आने का उपदेश देती है।

नर अचेत पाप ते डरुरे ॥

दीन दइिआल सगल भै भंजन सरनि ताहि तुम परुरे ॥

(गु.ग्रं.सा. अंग 22)

❋ दया ❋

किसी दुखी जीव के दुख का अनुभव करके उससे सहमति प्रक्ट करना, उसके दुख को दूर करने का प्रयत्न करना और दुख के समय उसकी मदद या सेवा करनी ही दया या करूणा है।

सचु ता परुजाणीऐ जा सिख सची लेइि ॥

दइिआ जाणै जीअ की किछु पुन्नु दानु करेइि ॥

(गु.ग्रं.सा. अंग 468)

❋ मीठा बोलना ❋

गुरू ग्रंथ साहिब का उपदेश है कि जीव को हमेशा मीठा बोलना चाहिए क्योंकि उसका परमात्मा सदा मीठा बोलता है :

मिठ बोलड़ा जी हरि सजणु सुआमी मोरा ॥

हउ संमलि थकी जी एहु कदे न बोलै कउरा ॥

(गु.ग्रं.सा. अंग 784)

मीठा बोलने वाले को हर जगह सत्कार मिलता है। गुरबाणी में मिठास और नम्रता को गुणों व अच्छाईयों को तत्त्व दर्शाया गया है :

मिठतु नीवी नानका गुण चंगिआईआ ततु ॥

(गु.ग्रं.सा. अंग 147)

❋ फीका बोलना ❋

गुरमति जीव को फीका भाव कड़वे बचन बोलने से मना करती है और फीके बोल बोलने वाले जीव की हर जगह बेइज़्ज़ती होती है।

नानक फिकै बोलिऐ तनु मनु फिका होइि ॥

फिको फिका सदीऐ फिके फिकी सोइि ॥

फिका दरगह सटीऐ मुहि थुका फिके पाइ ॥
फिका मूरखु आखीऐ पाणा लहै सजाइ ॥

(गु.ग्रं.सा. अंग 473)

❋ भेरव ❋

भेरव या पाखंड धारण करके लोगों को गुमराह करने वालों के लिए गुरू साहिब सख्त शब्दों का प्रयोग करते हुए उन्हें ठग्ग कहते हैं :

गली जिना जपमालीआ लोटे हथि निबग ॥
ओइ हरि के संत न आखीअहि बानारसि के ठग ॥

(गु.ग्रं.सा. अंग 476)

❋ मूर्ति व देवी पूजा ❋

गुरबाणी एक अकाल पुरख के इलावा किसी भी देवी-देवते की पूजा का निषेध करती है और साथ ही निरगुण की पूजा का सिद्धांत देकर सिक्ख को मूर्ति पूजा करने से भी रोकती है। अगर यह मूर्ति सच्ची होती तो वह इसे बनाने वाले को ही खा जाती जो इसकी छाती पर पांव रख कर इसे छीलता है।

पाखान गढि कै मूरति कीन्ी दे कै छाती पाउ ॥
जे इह मूरति साची है तउ गड़्णहारे खाउ ॥

(गु.ग्रं.सा. अंग 479)

जो जिसकी सेवा करता है, वह वैसा ही रूप धारण कर लेता है:

सिव सिव करते जो नरु धिआवै ॥ बरद चढे डउरू ढमकावै ॥
महा माई की पूजा करै ॥ नर सै नारि होइ अउतरै ॥

(गु.ग्रं.सा. अंग 874)

❋ नशा ❋

गुरमति किसी तरह के भी नशे सेवन करने से मना करती है तथा इसके सेवन से जीव को बुरे-भले की सूझ-बूझ नहीं रहती और उसे हर जगह धक्के ही मिलते हैं।

जितु पीतै मति दूरि होइ बरलु पवै विचि आइ ॥
आपणा पराइआ न पछाणई खसमहु धके खाइ ॥

जितु पीतै खसमु विसरै दरगह मिलै सजाइ ॥
झूठा मदु मूलि न पीचई जे का पारि वसाइ ॥

(गु.ग्रं.सा. अंग 554)

पान सुपारी खातीआ मुखि बीड़ीआ लाईआ ॥
हरि हरि कदे न चेतिए जमि पकड़ि चलाईआ ॥

(गु.ग्रं.सा. अंग 726)

❁ सांझीवालता ❁

सारे जीव एक प्रभु की आस में जीते हैं :

सभु को आसै तेरी बैठा ॥ घट घट अंतरि तूंहै वुठा ॥
सभे साझीवाल सदाइनि तूं किसै न दिसहि बाहरा जीउ ॥

(गु.ग्रं.सा. अंग 97)

वह हम सभी का पिता है, जिसे सब की चिन्ता है।

तूं साझा साहिबु बापु हमारा ॥ नउ निधि तेरै अखुट भंडारा ॥
जिसु तूं देहि सु तृपति अघावै सोई भगतु तुमारा जीउ ॥

(गु.ग्रं.सा. अंग 97)

जब जीव की परमात्मा के गुणों से सांझ पड़ जाती है तो उसे परमात्मा के सर्व – व्यापक होने के बारे में ज्ञान हो जाता है। फिर उसे सब अपने ही नज़र आते हैं भाव सब से उसकी सांझ पड़ जाती है:

ना को बैरी नही बिगाना सगल संगि हम कउ बनि आई ॥

(गु.ग्रं.सा. अंग 1299)

❁ नम्रता ❁

जीव हउमै को त्याग कर जितना नम्र होता है, उतना ही वह आत्मिक दृष्टि से ऊंचा गिना जाता है:

आपस कउ जो जाणै नीचा ॥ सोऊ गनीऐ सभ ते ऊचा ॥

(गु.ग्रं.सा. अंग 266)

❁ सिक्ख ❁

गुरू ग्रंथ साहिब में दी गई सिक्ख की परिभाषा :

गुर सतिगुर का जो सिखु अखाइे सु भलके उठि हरि नामु धिआवै ॥
उदमु करे भलके परभाती इसनानु करे अंमृत सरि नावै ॥
उपदेसि गुरूहरि हरि जपु जापै सभि किलविख पाप दोख लहि जावै ॥
फिरि चड़ै दिवसु गुरबाणी गावै बहदिआ उठदिआ हरि नामु धिआवै ॥
जो सासि गिरासि धिआइे मेरा हरि हरि सो गुरसिखु गुरूमनि भावै ॥
जिस नो दइिआलु होवै मेरा सुआमी तिसु गुरसिख गुरू उपदेसु सुणावै ॥
जनु नानकु धूड़ि मंगै तिसु गुरसिख की
जो आपि जपै अवरह नामु जपावै ॥

(गु.ग्रं.सा. अंग 305)

पारिवारिक रिश्ते

गुरमति जीव को संसार में रहते हुए अपने परिवारिक रिश्तों का सत्कार करने के लिए कहती है।

काहे पूत झगरत हउ संगि बाप ॥
जिन के जणे बडीरे तुम हउ तिन सिउ झगरत पाप ॥

(गु.ग्रं.सा. अंग 1200)

भाणा

इस संसार में सब कुछ प्रभु की रज़ा में ही हो रहा है।

जो किछु वरतै सभ तेरा भाणा ॥

(गु.ग्रं.सा. अंग 193)

जीव का संसार में आना – जाना प्रभु की रज़ा (भाणे) में ही होता है :

जंमणु मरणा हुकमु है भाणै आवै जाइि ॥

(गु.ग्रं.सा. अंग 472)

नदर

गुरू के बताए हुए मार्ग पर चलते हुए शरीर को प्रेम रूपी बर्तन बना कर, गुरू के शब्द की कमाई करने से जीव के ऊपर अकाल पुरख की ऐसी नदर होती है कि वह निहाल हो जाता है और मन टिकाव में आ जाता है :

जतु पाहारा धीरजु सुनिआरु॥ अहरणि मति वेदु हथीआरु॥
भउ खला अगनि तप ताउ ॥ भाँडा भाउ अंमृतु तितु ढालि ॥
घड़ीऐ सबदु सची टकसाल ॥ जिन कउ नदरि करमु तिन कार ॥
नानक नदरी नदरि निहाल ॥

(गु.ग्रं.सा. अंग 8)

❋ उद्यम ❋

पंचम पातशाह प्रभु को मिलने के लिए उद्यम करने पर ज़ोर देते हैं:

उदमु करेदिआ जीउ तूं कमावदिआ सुख भुंचु ॥
धिआइदिआ तूं प्रभू मिलु नानक उतरी चिंत ॥

(गु.ग्रं.सा. अंग 522)

❋ अमृत वेला ❋

जपु जी साहिब की चौथी पउड़ी में गुरू नानक साहिब प्रश्न रखते हैं कि प्रभु को कौन सी वस्तु अर्पण करे जिससे उसके दरबार के दर्शन हो सकें तथा मुंह से क्या बोलें जिससे प्रभु हमें प्यार करे। इसके उत्तर में आगे बचन करते हैं कि 'अमृत वेले' उठ कर उसकी वडिआई (प्रशंसा) करने से प्रभु की नदर होती है तथा उसके दर पर प्रवान हुआ जाता है :

फेरि कि अगै रखीऐ जितु दिसै दरबारु॥
मुहौ कि बोलणु बोलीऐ जितु सुणि धरे पिआरु॥
अंमृत वेला सचु नाउ वडिआई वीचारु॥
करमी आवै कपड़ा नदरी मोखु दुआरु॥
नानक इवै जाणीऐ सभु आपे सचिआरु॥

(गु.ग्रं.सा. अंग 2)

❋ मानव जन्म ❋

मनुष्य धरती पर सभी योनियों का सरदार करके माना जाता है

अवर जोनि तेरी पनिहारी ॥ इसु धरती महि तेरी सिकदारी ॥

(गु.ग्रं.सा. अंग 374)

यह मनुष्य देह परमात्मा को मिलने का समय है।

भई परापति मानुख देहुरीआ ॥ गोबिंद मिलण की इह तेरी बरीआ ॥

(गु.ग्रं.सा. अंग 378)

तीर्थ स्नान

गुरबाणी के अनुसार परमात्मा का नाम ही असल तीर्थ है :

तीरथि नावण जाउ तीरथु नामु है ॥

तीरथु सबदु बीचारु अंतरि गिआनु है ॥

(गु.ग्रं.सा. अंग 687)

कर्म

'करम' का भाव है कर्म जो कुछ हम करते हैं :

जेहे करम कमाइ तेहा होइसी ॥

(गु.ग्रं.सा. अंग 730)

सुख दुख

सुख केवल परमात्मा के नाम में है :

सुखु नाही बहुतै धनि खाटे ॥ सुखु नाही पेखे निरति नाटे ॥

सुखु नाही बहु देस कमाए ॥ सरब सुखा हरि हरि गुण गाए ॥

(गु.ग्रं.सा. अंग 1147)

जीवन के असली भेद को उसने जाना है जो सुख दुख को एक समान जानता है :

सुखु दुखु दोनो सम करि जानै अउरु मानु अपमाना ॥

हरख सोग ते रहै अतीता तिनि जगि ततु पछाना ॥

(गु.ग्रं.सा. अंग 219)

व्रत

गुरबाणी व्रत रखने का ज़ोरदार खंडन करती है :

छोडहि अंनु करहि पाखंड ॥ ना सोहागनि ना ओहि रंड ॥

(गु.ग्रं.सा. अंग 873)

❀ मौत ❀

सब ने इस संसार से चले जाना है, यहां सदा के लिए नहीं रहना।

सभना मरणा आइआ वेछोड़ा सभनाह ॥

(गु.ग्रं.सा. अंग 595)

चाहे कोई अमीर हो या गरीब, सभी ने बारी – बारी यहां से चले जाना है।

राणा राउ न को रहै रंगु न तुंगु फकीरु॥
वारी आपो आपणी कोइ न बंधै धीर ॥

(गु.ग्रं.सा. अंग 936)

❀ पांच चोर ❀

गुरू ग्रंथ साहिब में काम, क्रोध, लोभ, मोह व अहंकार जैस अवगुणों या विकारों को पांच चोर कहा गया है जो इस शरीर में बसते है। जब तक जीव इन विकारों में फंसा रहता है, तब तक वह अंधकार में भटकता रहता है।

इसु देही अंदरि पंच चोर वसहि कामु क्रोधु लोभु मोहु अह्मकारा ॥
अंमृतु लूटहि मनमुख नही बूझहि कोइ न सुणै पूकारा ॥

(गु.ग्रं.सा. अंग 600)

❀ निंदा ❀

निंदा से भाव है किसी की चुगली करनी। गुरमति जीव को निंदा करने से रोकती है।

निंदा भली किसै की नाही मनमुख मुगध करंनि ॥
मुह काले तिन निंदका नरके घोरि पवंनि ॥

(गु.ग्रं.सा. अंग 755)

निंदा करनी छोड़ने से जीव के मन की सारी चिन्ताएं दूर हो जाती हैं।

प्रथमे छोडी पराई निंदा ॥ उतरि गई सभ मन की चिंदा ॥

(गु.ग्रं.सा. अंग 1147)

❀ पराया हक ❀

पराया हक मारना एक बड़ा दोष है। इस्लाम धर्म में सूअर को मारना व हिन्दू

धर्म में गाय हत्या पाप माना जाता है। यह उदाहरण देते हुए गुरू नानक साहिब बचन करते हैं :

हकु पराइआ नानका उसु सूअर उसु गाइ ॥
गुरु पीरु हामा ता भरे जा मुरदारु न खाइ ॥

(गु.ग्रं.सा. अंग 141)

जो जीव परायी वस्तु की ओर नहीं देखते, प्रभु उनके संग बसता है :

पर धन पर दारा परहरी ॥ ता कै निकटि बसै नरहरी ॥

(गु.ग्रं.सा. अंग 1163)

लंगर

गुरू नानक साहिब ने इस संस्था की नींव 'वंड छकण' के सिद्धांत पर रखी। गुरू अंगद देव जी द्वारा चलाए जा रहे लंगर में माता खीवी जी की सेवा का हवाला 'सते बलवंड की वार' में से मिलता है :

बलवंड खीवी नेक जन जिसु बहुती छाउ पत्राली ॥
लंगरि दउलति वंडीऐ रसु अंमृतु खीरि घिआली ॥

(गु.ग्रं.सा. अंग 967)

इसके साथ-साथ गुरू घर में शब्द का लंगर भी बांटा जाता है जो जीव की आत्मा का आहार है।

लंगरु चलै गुर सबदि हरि तोटि न आवी खटीऐ ॥
खरचे दिति खसंम दी आप खहदी खैरि दबटीऐ ॥

(गु.ग्रं.सा. अंग 967)

बुरा भला

गुरबाणी से सेध मिलती है कि क्रोध कर त्याग कर जीव को बुरे का भी भला करना चाहिए साथ ही यह भावना होनी चाहिए :

फरीदा बुरे दा भला करि गुसा मनि न हढाइ ॥
देही रोगु न लगई पलै सभु किछु पाइ ॥

(गु.ग्रं.सा. अंग 728)

साथ ही यह भावना होनी चाहिए कि :

हम नही चंगे बुरा नही कोइ ॥ प्रणवति नानकु तारे सोइ ॥

(गु.ग्रं.सा. अंग 278)

❋ दुविधा ❋

दुविधा से भाव दुचितापन है। यह वह अवस्था है जब दुनियावी मोह – माया में भटकता मन टिकाव में नहीं रहता।

दुबिधा विचि बैरागु न होवी जब लगु दूजी राई ॥

(गु.ग्रं.सा. अंग 634)

प्रभु की सिफत – सलाह करने से सारी दुविधा दूर हो जाती है :

होइ इकत्र मिलहु मेरे भाई दुबिधा दूरि करहु लिव लाइ ॥
हरि नामै के होवहु जोड़ी गुरमुखि बैसहु सफा विछाइ ॥

(गु.ग्रं.सा. अंग 1185)

❋ नाशमानता ❋

इस संसार में सभी कुछ नाशवान है।

जो आइआ सो चलसी सभु कोई आई वारीऐ ॥

(गु.ग्रं.सा. अंग 474)

इसीलिए उस करतार का ही सिमरन करो जो हमेशा स्थिर रहने वाला है।

जो उपजिओ सो बिनसि है परो आजु कै कालि ॥
नानक हरि गुन गाइ ले छाडि सगल जंजाल ॥

(गु.ग्रं.सा. अंग 1429)

❋ मित्रता ❋

वही जीव परमात्मा से निकटता प्राप्त कर सकता है जो सभी के साथ एक जैसा व्यवहार करे व हरेक को अपना मित्र (मीत) जाने।

सभु को मीतु हम आपन कीना हम सभना के साजन ॥
दूरि पराइओ मन का बिरहा ता मेलु कीओ मेरै राजन ॥

(गु.ग्रं.सा. अंग 671)

मैत्री पूर्ण व्यवहार से ही जीव आनंद की प्राप्ति कर सकता है।

कीर्तन

गुरबाणी को रागों में उच्चारण करने को कीर्तन कहते हैं। यह सिक्ख धर्म की भक्ति का एक खास अंग है।

हरि कीरतनु सुणै हरि कीरतनु गावै ॥
तिसु जन दूखु निकटि नही आवै ॥

(गु.ग्रं.सा. अंग 190)

कीर्तन निर्मोलक हीरा है जिसका मूल्य नहीं लगाया जा सकता:

कीरतनु निरमोलक हीरा ॥ आन्नद गुणी गहीरा ॥

(गु.ग्रं.सा. अंग 893)

सहनशीलता

सहनशीलता से भाव है सहन या बर्दाशत करने की शक्ति, हर समय धैर्य व सब्र बनाए रखना। इस गुण के कारण मन सदा शांत व अडोल रहता है। यह एक ऐसा गुण है जिससे कंत प्रभु को खुश किया जा सकता है :

निवणु सु अखरु खवणु गुणु जिहबा मणीआ मंतु ॥
इे त्रै भैणे वेस करि ताँ वसि आवी कंतु ॥

(गु.ग्रं.सा. अंग 1384)

इससे जीव का मानसिक संतुलन बना रहता है व हृदय रूपी घर में शांति आ बसती है। इस अवस्था में जीव परमात्मा के दिए सुख या दुख को सदा ही सुख समझ कर सहारता है :

प्रभ तुम ते लहणा तूं मेरा गहणा ॥
जो तूं देहि सोई सुखु सहणा ॥

(गु.ग्रं.सा. अंग 106)

माया

माया के कारण दुनिया का मोह पड़ जाता है लेकिन गुरू की कृपा से जिनकी प्रीत की डोर प्रभु चरणों से जुड़ी रहती है, उन्हें माया में रहते हुए भी आत्मिक आनंद मिल जाता है।

इेह माइिआ जितु हरि विसरै मोहु उपजै भाउ दूजा लाइिआ ॥
कहै नानकु गुर परसादी जिना लिव लागी

तिनी विचे माइिआ पाइिआ ॥

(गु.ग्रं.सा. अंग 922)

❀ धैर्य ❀

प्रभु का नाम जपने से मन को धैर्य (धीरज) आ जाता है :

जब देखा तब गावा ॥ तउ जन धीरजु पावा ॥

(गु.ग्रं.सा. अंग 656)

❀ धर्म ❀

सब से उत्तम व श्रेष्ठ धर्म है प्रभु का नाम जपना व शुभ कर्म करने।

सरब धरम महि स्रेसट धरमु ॥ हरि को नामु जपि निरमल करमु ॥

(गु.ग्रं.सा. अंग 266)

❀ जाति-पाति ❀

गुरमति में जाति-पाति के भेद भाव को कोई स्थान प्राप्त नहीं है। जो जीव अपनी जाति का गर्व करता है, वह मूर्ख है और उसमें बहुत विकार पैदा हो जाते हैं।

जाति का गरबु न करि मूरख गवारा ॥
इसु गरब ते चलहि बहुतु विकारा ॥

(गु.ग्रं.सा. अंग 1127)

शब्द गुरू

सबदु गुर पीरा गहिर गंभीरा बिनु सबदै जगु बउरानं ॥

(गु.ग्रं.सा. अंग 635)

जिस शब्द को गुरू कहा गया है, वह शब्द ईश्वरीय पैग़ाम है, ब्रहम या करतार का अनुभव है जो गुरू द्वारा इस संसार पर प्रक्ट हुआ है। बाणी के अन्दर 'शब्द' को उस परमात्मा का निजि अनुभव कहा गया है और इसकी अरूप परमात्मा के सुन्दर चरण-कंवल के रूप में प्रशंसा की गई है

हिरदै चरण सबदु सतिगुर को नानक बाँधिओ पाल ॥

(गु.ग्रं.सा. अंग 680)

लोगु जानै इहु गीतु है इहु तउ ब्रहम बीचार ॥

(गु.ग्रं.सा. अंग 335)

सतिगुरू से नाज़ल हुआ यह परमात्मा का अनुभव रूपी शब्द, बाणी द्वारा प्रक्ट हुआ है। इसीलिए 'धुर की बाणी' को ही गुरू का दर्ज़ा दिया गया है :

धुर की बाणी आई ॥ तिनि सगली चिंत मिटाई ॥

(गु.ग्रं.सा. अंग 628)

यह 'धुर की बाणी' ही गुरू है और इसी बाणी भाव शब्द गुरू द्वारा ही धर्मी जीवन घड़ा जाता है :

भाँडा भाउ अंमृतु तितु ढालि ॥ घड़ीऐ सबदु सची टकसाल ॥

(गु.ग्रं.सा. अंग 8)

इसे ढालने का राह है सुरति को शब्द में जोड़ना व उस परमात्मा के स्वरूप में लीन होना।

गुरू पंथ

'सिक्खव रहित मर्यादा' के अनुसार तैयार-बर-तैयार सिंहों के समूचे समूह को 'गुरू पंथ' कहते हैं। इसकी तैयारी दस गुरू साहिबान ने की और दसम पातशाह ने इसको अंतिम स्वरूप मान कर गुरगद्दी सौंप दी। पंथ की संकल्पना गुरू नानक पातशाह के समय से ही आरम्भ होती है

नानकि राजु चलाइआ सचु कोटु सताणी नीव दै ॥
लहणे धरिएनु छतु सिरि करि सिफती अंमृतु पीवदै ॥

(गु.ग्रं.सा. अंग 966)

गुरू नानक पातशाह ने अपनी ज्योति गुरू अंगद साहिब में टिका कर गुरगद्दी उन्हें सौंप दी:

जोति ओहा जुगति साइ सहि काइआ फेरि पलटीऐ ॥

(गु.ग्रं.सा. अंग 966)

गुरू नानक साहिब ने गुरू अंगद देव जी को गुरू थाप कर उनके आगे शीश झुका दिया। 'आपे गुर चेला' की डाली हुई यह परम्परा दसम पातशाह तक निर्विघ्न चलती रही। 1699 ई. की बैसाखी को ख़ालसा सृजना हुई तो शरव्सी गुरू का सिलसिला समाप्ति की ओर बढ़ रहा था। यह एक और कदम उस दिशा की ओर था जब गुरू दीक्षा का अधिकार पांच गुरसिक्खों ने दिया। गुरू की ज़िम्मेवारी को निभाने का अधिकार (delegation of power) पांचों के पास आना एक मील पत्थर था।



1708 ई. में दसम पातशाह गुरू गोबिंद सिंह जी ने गुरू ज्योति 'गुरू ग्रंथ साहिब जी' में सुभायेमान की और गुरू युक्ति के वरतारे का अधिकार गुरू ग्रंथ साहिब जी की ताबियां के नीचे पांच प्यारों की अगुवाई में 'गुरू पंथ' को दे दिया।

गुरू ग्रंथ साहिब की विलक्षणता

'आदि ग्रंथ' के सम्पादन के पीछे गुरू साहिबान के मन में एक बड़ा प्रश्न था, क्योंकि दुनिया के अन्य धर्म ग्रंथों को संग्रहित करने की ज़िम्मेवारी उन धर्मों की बौद्धिक उत्तमता ने निभाई थी। उदाहरण के रूप में, पवित्र बाईबल पैगम्बर यीसू के परलोक गमन से 100 वर्ष पश्चात सामने आया, पवित्र कुरआन का सम्पादन खलीफा उस्मान के समय सम्पूर्ण हुआ, पवित्र वेद लम्बा समय श्रुति व स्मृति के हिस्सा रहे, जैन धर्म के धर्म ग्रंथ इस धर्म के अंतिम तीर्थाकर महावीर जैन से 925 वर्ष पश्चात संकलित किए गए और बुद्ध धर्म के पवित्र ग्रंथों को लिखित रूप (सिल्लियों के ऊपर) 85 बी.सी. में मिला।

उपरोक्त धर्म ग्रंथों के सृजना इतिहास की ओर नज़र डालने के उपरान्त, गुरू ग्रंथ साहिब जी की विलक्षणता की झलक स्पष्ट नज़र आने लग जाती है क्योंकि:

1. धर्मों के इतिहास में यह एक ऐसा धर्म ग्रंथ है जिसे गुरू रूप में प्रवान किया हुआ है। यह दुनिया का एक ही वाहिद धार्मिक इलाही ग्रंथ है जिसे प्रकाश करना, संतोखना, हुक्म लेने का विभिन्न विधि-विधान है जो अन्य किसी धर्म ग्रंथ को हासिल नहीं है।

2. यह एक ही ऐसा धर्म ग्रंथ है जिसका सम्पादन स्वयं धर्म के प्रवर्तकों द्वारा खुद किया गया है। इसीलिए 'गुरू ग्रंथ साहिब' शंकाओं व किन्तु-परन्तुओं से मुक्त है।

3. गुरू ग्रंथ साहिब में कहीं भी सिक्ख गुरू साहिबान की कथा-कहानियों को चमत्कारी रूप में पेश नहीं किया हुआ है।

4. गुरू ग्रंथ साहिब के भीतर का चिंतन, मानव मुक्ति के द्वार खोलता हुआ एक ऐसे मनुष्य की तस्वीर की सृजना करता है जो मानवता की 'बंद खलासी' तथा

'पत सेती' जीवन के लिए ज़िन्दगी व मौत को एक जैसा समझता है।

5. गुरू ग्रंथ साहिब जी हिन्दुस्तान के 500 वर्ष (12वीं से 17वीं सदी) के इतिहास का भी स्रोत है।

6. गुरू ग्रंथ साहिब में 'शब्द गुरू' का विलक्षण सिद्धांत पेश किया गया है जिस का प्रकाश रहती दुनिया तक ज्यों का त्यों बरकरार रहेगा।

जैसे – जैसे गुरू ग्रंथ साहिब जी की बाणी का प्रकाश मानवता में फैलेगा, मनुष्य जाति इससे सही दिशा – निर्देश व अगुवाई प्राप्त करेगी, मानवता की आत्मिक शांति का प्रसार बढ़ेगा और दुनिया में भाईचारे की झलकियां स्पष्ट नज़र आयेंगी। गुरू ग्रंथ साहिब की बाणी का प्रकाश वहम – भ्रम, व्यर्थ कर्म – काण्ड तथा जाति – पाति से मुक्त समाज की स्थापना में सहायक होगा।



गुरु समरथु गुरु निरंकारु गुरु ऊचा अगम अपारु ॥
गुर की महिमा अगम है किआ कथै कथनहारु ॥
(गु.ग्रं.सा. अंग : 52)